चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र
6

Photo by C. P. Patel

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

"हम तो जोगी ध्यान लगाए..."

प्रेषिका
श्री राजकुमारी, मद्रास

मल्टीकलर

फ़ोटो आफसेट प्रिंटिंग में
प्रोसेस ब्लाक् मेकिंग् में—

आधुनिक मेशीनरी,
अनुभवी टेक्नीशियन
कुशल कलाकार और

३०"×४०" के केमरे की
सहायता से सदा ऊँचा स्तर
निभानेवाली दक्षिण भारत की
एक मात्र संस्था है :

प्रसाद् प्रोसेस लिमिटेड,

चन्दामामा बिल्डिंग्स,
वड़पलनी : मद्रास—२६.

वर्ष ७ फरवरी १९५६ अंक ६

विषय - सूची

वार्षिक चन्दा रु. ४-८-०

एक प्रति रु. ०-६-०

विचित्र जुड़वाँ

डाक व्यय: दो आना अधिक.
रु. १-६-० भेजनेवालों को पुस्तक रजिस्ट्री से
भेज दी जायगी ।
एजेन्टों को उचित कमीशन दिया जायगा ।

★ ★ ★

चन्दामामा पब्लिकेशन्स,
मद्रास - २६

चन्दामामा नौ भाषाओं में....

जानवरी १९५६ का
जान्हमामु (उड़िया)
प्रकाशित हो गया ।

अन्य भाषाओं में :

चाँदोबा (मराठी)
चन्दामामा (हिन्दी, कन्नड, तेलुगु और अंग्रेज़ी)
चान्दामामा (गुजराती)
अम्बुलिमामा (तमिल)
अम्बुलि अम्मावन (मलयालम)

★

प्रत्येक भाषा का वार्षिक चन्दा रु. ४-८-०, दो वर्षों के लिये रु. ८-०-० है, एक प्रति ०-६-०. किसी भी महीने से ग्राहक बनाये जाते हैं ।

★

चन्दामामा पब्लिकेशन्स,
वड़पलनी :: मद्रास-२६.

छोटी एजन्सियों की योजना

★

'चन्दामामा' रोचक कहानियों की मासिक पत्रिका है।

अगर आपके गाँव में एजेन्ट नहीं है, तो चुपके से २) भेज दीजिए। आपको चन्दामामा की ५ प्रतियाँ मिलेंगी, जिनको बेचने से ॥=) का नफ़ा रहेगा।

लिखिए:

चन्दामामा प्रकाशन

वडपलनी :: मद्रास-२६.

आधुनिक भारतवर्ष के निर्माण के लिए

नौजवानों की बड़ी आवश्यकता है। अगर ऐसी माताओं की भी आवश्यकता हो, जो ऐसे नौजवानों को उत्पन्न कर सकें, तो महिलाओं के सेवन के लिये है:

लोध्रा

गर्भाशय के रोगों का नाशक।

केसरी कुटीरम् लिमिटेड

१५ वेस्टकाट रोड, रायपेट,

मद्रास-१४.

LODHRA

FOR LADIES HEALTH

केसरि कुटीरम् लि. • मद्रास-14

दी बी. एन. के. प्रेस लिमिटेड
चन्दामामा बिल्डिंग्स :: मद्रास-२६
हम प्रत्येक व्यक्ति और व्यापारिक संस्थाओं को आश्वासन देना चाहते हैं कि कलात्मक सृजन, स्वच्छतम कार्य-निपुणता, आकर्षणीय छपाई और शीघ्र वितरण हमारा ध्येय है।
अंग्रेज़ी, हिन्दी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मराठी, गुजराती, मलयालम और उड़िया में छपाई का कार्य किया जायगा।
फ़ोन :
८८५७५
BNK PRESS LTD
PRINTERS
MADRAS, 26.

चन्दादारों को सूचना

'चन्दामामा' नौ भाषाओं में छपता है। हरेक का वार्षिक चन्दा रु. ४-८-० है। दो वर्ष का चन्दा केवल रु. ८-०-० है। नमूने की प्रति के लिए सात आने के डाक-टिकट भेज दें। वार्षिक चन्दा, व्यवस्थापक, 'चन्दामामा' के नाम पर भेजने की कृपा करें। मनीआर्डर के कूपन में भी अपना पता स्पष्ट लिख देना चाहिए।

'चन्दामामा' अगर समय पर नहीं मिला, तो ता. १० के अन्दर डाकखाने में शिकायत करके उसकी नक़ल हमारे कार्यालय में भेज दें। साथ साथ अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें, ताकि शीघ्रता से कार्रवाई कर सकें।

व्यवस्थापक : "चन्दामामा"

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हम "चन्दामामा" में ऐसी सामग्री देने का प्रयत्न करते हैं, जो शिक्षाप्रद हो और मनोरंजक भी। शैशवावस्था में, क्रीड़ा-कलाप और मनोरंजन की ओर अधिक आकर्षण रहता है। पर इसका अर्थ यह नहीं कि पाठ्य-पुस्तकों की उपेक्षा करें।

मनोरंजन के बारे में, संभवतः जीवन-यापन हो सकता है: परन्तु शिक्षा के बगैर, अच्छा मनोरंजन भी नहीं हो सकता। अतः बच्चों को अपना एक निश्चित कार्यक्रम बना लेना चाहिये। उसमें शिक्षा के साथ मनोरंजन को भी प्रधानता दी जानी चाहिये।

फरवरी १९५६

वर्ष : ७
अंक : ६

पुराना राग

सर्प एक था बड़ा भयंकर
और बहुत ही अभिमानी;
सभी कांपते भय से उसके
करता जब वह मनमानी!

गुज़र रही थी गाड़ी इक दिन
जिसे देख उसने यह ठानी—
बीच राह पर क्यों न रोक दूं,
कर दूं पानी पानी!

चला वेग से, जैसे उसको
करना कोई कार्य महान;

औ' आज्ञा दी मेंढक को यह—
"इस अवसर पर गाओ गान!"

मूरख था मेंढक, उसने झट
किया शुरू ही तो कर गान;
'टें-टें, टर-टों' के सुर में ही
छेड़ी उसने अपनी तान!

उत्साहित हो गया सर्प तब
सुनकर मेंढक का संगीत,
लेट गया जा बीच सड़क पर
गाड़ी के आगे विपरीत।

"गाड़ीवान उसे लखते ही
हो जायेगा तत्क्षण भीत,

लेकिन बंद न हो पाया था
मेंढक का टर्राना लेश।

पक्षी-दल को ज़रा न भाया
मेंढक का वह राग पुराना;
टूट पड़े उस पर वे सारे
हुआ खतम यों शेष फ़साना।

खाकर उसको, लगे चहकते
पक्षी मानों हमें सुनाने—
"दुष्टों का युग बीत गया तो
सुनें राग क्यों वही पुराने!"

औ, रोकेगा गाड़ी को जब
होगी तब मेरी ही जीत!—"

यही सोचकर मन में अपने
सर्प रहा लेटा निःशंक;
लेकिन गाड़ी रुकी नहीं औ'
सरक गये पहिए निष्कंप!

जीवन-लीला हुई खतम यों
हुए साँप के टुकड़े तीन,
मेंढक कुछ भी जान न पाया
'टर-टर' करता था तल्लीन!

आखिर पक्षी-दल भी आये
किया सर्प को खा निःशेष;

मुख-चित्र

★

बहुत पहिले देवताओं और दानवों में युद्ध हुआ। उसमें देवताओं की बुरी तरह पराजय हुई। क्योंकि देवताओं में कोई योग्य, समर्थ सेनापति नहीं था।

देवताओं की पराजय देखकर इन्द्र दुःखित हुआ। उसने ब्रह्मा के पास जाकर कहा—"देव! देवताओं के लिए योग्य सेनापति कहाँ मिल सकेगा?" ब्रह्मा ने इन्द्र से कहा—"सोम सूर्याग्नि से संभूत व्यक्ति ही देव-सेना का नेतृत्व सफलतापूर्वक कर सकेगा।"

यह सुनकर इन्द्र ने सोचा कि ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति का जन्म कैसे संभव हो सकेगा! उसने परमेश्वर के पास जाकर एक योग्य और समर्थ सेनापति देने की प्रार्थना की! उस समय परमेश्वर तपस्या में लीन थे, उन्होंने अपनी तीसरी आँख खोलकर देखा! उनकी आँख खुलते ही, जलती हुई अग्नि किरण बाहर निकल आयी थीं। वे बहुत ही तेज और सारी पृथ्वी का नाश कर सकती थीं। देवता डर के मारे हाहाकार करने लगे।

देवताओं का आर्तनाद सुन परमेश्वर ने वायु और अग्नि को भेजकर उन अग्नि किरणों को एक साथ गंगा में छोड़ आने का आदेश दिया। उसके बाद उन अग्नि किरणों के सम्मिश्रण से एक प्रतिभाशाली बच्चे का जन्म हुआ। कार्तिक कन्याओं ने उस बच्चे का पालन-पोषण किया! उस बच्चे में अपनी महिमा का अंश देखकर पार्वती-परमेश्वर बहुत ही प्रसन्न हुए!

उसी का नाम कुमार स्कंध या कुमार स्वामी है। छुटपन में ही, वह मदमत्त हाथियों को धराशायी कर देता था, एक एक बाण से एक एक पर्वत को चकनाचूर कर देता था। इन्द्र ने, षष्ठी के दिन, देवसेना नाम की कन्या से, कुमार स्वामी का विवाह कर दिया। यही कारण है कि कुमार स्वामी के लिये यह तिथि पवित्र है।

काशी राज्य के राजा ब्रह्मदत्त के लड़के के रूप में बोधिसत्व ने जन्म लिया। ब्रह्मदत्त ने उसका नाम शीलव रखा।

ब्रह्मदत्त के बाद, शीलव काशी राज्य का राजा हुआ। उन्होंने बड़े प्रेम और उदारता से प्रजा का पालन किया। उन लोगों को, जो गरीबी के कारण चोरी किया करते, या निस्सहाय अवस्था में दूसरों को तंग करते, उनको बुलाकर बोधिसत्व समझाते और कभी कभी उनको रुपया पैसा भी देते। इस कारण, राज्य में चोरियाँ बिल्कुल ही कम नहीं, परन्तु प्रजा भी राजा से अत्यधिक प्रेम करने लगी।

काशी राज्य के समीपवर्ती कोसल देश के मन्त्री को काशी राज्य को हड़प लेने की सूझी। उसने अपने राजा से कहा—"काशी का राजा शीलव बहुत निर्बल है। वह डाकू-डकैतों को भी दंड देने में आगा-पीछा करता है। ऐसे डरपोक को हम आसानी से जीत सकते हैं।"

यह बात सच है कि नहीं, जानने के लिए, कोसल देश के राजा ने कुछ सैनिकों को बुलाकर आज्ञा दी—"तुम काशी राज्य की सीमाओं को पारकर, वहाँ के गाँवों में लूट-मार करके आओ।"

ये सैनिक ज्योंही काशी राज्य के गाँवों में घुसे, त्योंही, वहाँ के लोग उन्हें पकड़कर शीलव के पास ले गये।

"भाइयो! तुम विदेशी जान पड़ते हो। तुम गाँवों को क्यों लूटना चाहते हो? क्या कारण है।"—शीलव ने पूछा।

"महाराज, हमें खाने पीने को भी नसीब नहीं होता, इसीलिये हमें लूट-मार करनी पड़ी।"—सैनिकों ने कहा।

'जातक कथा'

"अगर खाने-पीने को नहीं मिलता था, तो मुझसे क्यों नहीं कहा!" कहते हुये शील्व ने अपने खज़ाने से रुपया-पैसा मँगा कर उनको देकर विदा किया।

शील्व का यह व्यवहार देखकर कोसल राजा को और लालच हुआ। कुछ दिनों बाद उसने अधिक सैनिकों को, काशी राज्य के नगरों पर हमला करने के लिए भेजना शुरू किया। वे भी काशी राज्य की प्रजा के हाथों पकड़े गये। तब भी शील्व ने उनको पहिले की तरह रुपया-पैसा देकर भेज दिया, उन्हें किसी तरह की सज़ा न दी।

कोसल देश के राजा का हौसला बढ़ा। वह अपनी सेनाओं को जमा कर, काशी राज्य पर आक्रमण करने के लिए निकल पड़ा। जब यह बात गुप्तचरों द्वारा मन्त्रियों और सेनापतियों को मालूम हुई, तो उन्होंने शील्व के पास जाकर कहा—"महाराज! लगता है, कोसल देश के राजा हम पर आक्रमण कर रहा है, हमें मुकाबला करने की अनुमति कृपया दीजिये।"

शील्व ने युद्ध के लिए अपनी अनुमति न दी। "व्यर्थ रक्त-पात नहीं होना चाहिये। यदि वे मेरा राज्य ही लेना चाहते हैं, तो लेने दो। उनके लिए किले के फ़ाटक खुले ही रखिये।"—शील्व ने कहा।

"आप शत्रु के रूप में नहीं, मित्र ही बनकर आइये।"—शील्व ने कोसल राजा के पास ख़बर भिजवायी। कोसल राजा ने सोचा कि शील्व अपनी कमज़ोरी के कारण ऐसा कर रहा है।

अपनी सेना के साथ राजा शील्व के दरबार में पैर रखते ही कोसल राजा ने अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि शील्व और उसके मन्त्रियों के हाथ पीठ पीछे बाँध दिये जायें।

"आपको इस तरह व्यवहार करना अच्छा नहीं।"— शील्व ने कहा। कोसल राजा ने परिहास से अट्टहास किया।

शील्व और उसके मन्त्रियों के राज-वस्त्र उतार दिये गये। उनको मामूली कपड़े दे दिये गये। कोसल राजा ने शाम तक नगर छोड़कर उन्हें जाने की भी आज्ञा दी।

शील्व और उनके मन्त्री, शाम होते होते काशी नगर छोड़कर वन की ओर जा रहे थे। अन्धेरा हो जाने पर, वहीं जंगल में वे ठहर गये। रात भर, उन्हें कुछ खाने-पीने को न मिला।

आधी रात के समय कई सारे चोर वहाँ आकर शील्व से इस प्रकार कहा :

"महाराज! हम चोर हैं। आपकी कृपा से, अब तक हम बिना चोरी किये ही अपना गुजारा करते आ रहे थे। परन्तु आज से फिर हमारी दिक्कतें शुरू हो गई हैं। इसलिये आज हमने राज महल में छापा मारा, और यह सब समान वहाँ से चुरा लाये हैं। ये लीजिये, ये आपकी पोशाकें हैं और तलवार वगैरह। हम आपके लिये यह राजोचित भोजन भी लाये हैं। आप

भोजन कीजिये और हमें आज्ञा दीजिये कि हम इस रुपये-पैसे का क्या करें।"

शील्व और मन्त्रियों ने खा-पीकर, अपने अपने कपड़े पहिन लिए। शील्व ने कहा—"अच्छा होगा, अगर आप यह जान लें कि नया राजा आपकी समस्याओं को किस तरह हल करता है। यह जाने और चोरी करना अच्छा नहीं। यह धन ले जाकर राजा को दे दो और उनसे अपनी रोज़ी का रास्ता पूछो।"

"आतिथ्य देनेवाले को जिसने लूट लिया है, वह इतना न्यायशील नहीं होगा।

हम उस नीच के पास नहीं जायेंगे। आप ही हमारे महाराजा हैं। हमें आप ही रास्ता दिखाइये।"—चोरों ने कहा।

"अगर तुम नहीं आओगे, तो यह धन लेकर मैं ही जाऊँगा।"—शीलव ने कहा।

वे अपने मन्त्रियों को साथ लेकर, सवेरे राज दरबार में पहुँचे। शीलव को वहाँ देखते ही कोसल राजा हैरान रह गया। फिर उसने कहा—"हमने आपसे कहा था कि अगर आप नगर में रहें तो आपके प्राण न बचेंगे। आप फिर क्यों आये?"

शीलव ने सारी घटना सुनाकर कहा—"आपने मुझसे राज-गद्दी इसी कारण तो छीनी थी, ताकि आप मुझसे अधिक प्रेम से प्रजा का पालन कर सकें! बेचारे चोरों को इस बात की खबर न थी। उन्होंने सोचा कि आपके राज्य में उन्हें भूखों मरना होगा। इसी डर से उन्होंने आपका खजाना लूट लिया है। उनको यह आश्वासन देकर कि आप मुझ से भी अच्छी तरह उनकी देख-भाल करेंगे, मैं आपका धन आपके पास लाया हूँ। इसके सिवाय मुझे और कोई काम नहीं है।"

तुरन्त कोसल राजा का हृदय बदला। उसने शीलव के पैरों पर पड़कर कहा—"महात्मा! आपके सद् व्यवहार को मैं न समझ सका। चोरों को भी आत्मीय की तरह प्रेम करनेवाले को मैं न पहिचान सका। नीच मन्त्री की सलाह सुन मैंने आपके साथ अन्याय किया है। कृपया आप अपना राज्य लेकर मुझे अनुगृहीत कीजिये। मेरे लिये आपकी मैत्री काफ़ी है। मुझे आपका राज्य नहीं चाहिये।"

शीलव ने कोसल राजा और उनके नौकर-चाकरों को, कुछ दिनों अपने यहाँ रख, सम्मान के साथ भेज दिया।

[७]
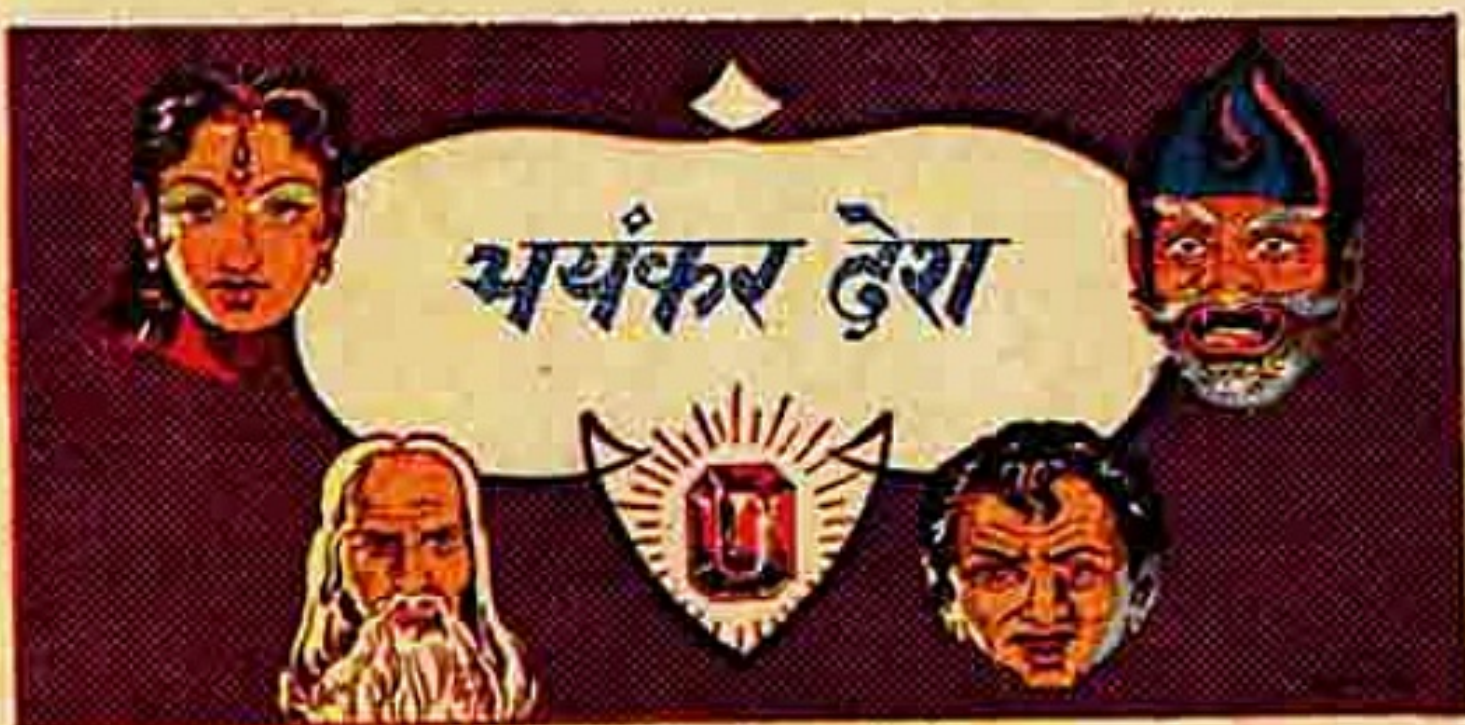
[प्रजा के आन्दोलन ने राजा चित्रसेन की मानों कमर तोड़ दी। उन्होंने यकायक राजमहल से कूदकर, अपने प्राण छोड़ दिये। तब तुरन्त प्रजा समरसेन का 'जय जयकार' करने लगी। समरसेन नरवाहन को साथ लेकर शत्रु का मुकाबला करने के लिये निकल पड़ा। बाद में....]

"दो तीन सौ पदातियों के आगे अर्ध चन्द्राकार रूप में, कुछ घुड़-सवार चलने लगे। इससे पहिले कि शत्रु पदातियों पर हमला कर सकते, उन्हें अब पहिले समरसेन के घुड़-सवारों का मुकाबला करना पड़ेगा न!"—शिवदत्त ने पूछा।

"हाँ, समरसेन की व्यूह-रचना लाजवाब थी न!"—मन्दरदेव ने कहा।

"समरसेन की इस नई चाल ने शत्रु-सेना में खलबली मचा दी। वे घबरा गये। ज्यों ज्यों समरसेन की सेना आगे बढ़ती जाती थी, त्यों त्यों वे पीछे हटते जाते थे। मगर उनका पीछे हटना भी सुसंगठित था, जैसे कोई चाल चल रहे हों। यकायक समरसेन की सेना के शंख-नाद और 'जय जयकार' से आकाश गूँज उठा। आगे बढ़ते उसके घुड़-सवार, शत्रु घुड़-सवारों से जा भिड़े। भाले-बरछे, कटार-तलवार उनके हाथ में थे। उनके भीषण युद्ध का वर्णन नहीं किया जा सकता। वह बहुत भयंकर युद्ध था।

चार-पाँच मिनट में ही, शत्रु घुड़-सवार तितर-बितर होकर इधर-उधर भागने लगे।

उसी समय पदातियों ने शत्रु पर हमला किया। विजयोन्मत्त समरसेन के घुड़-सवार भी, शत्रुओं को बरछों से मारने लगे। शत्रु मुक़ाबला न कर सके और भागने लगे। पर भागने का रास्ता बन्द था, इसलिये शत्रु जमकर लड़ने लगे और खूब लड़े।

यह अनुमान कर कि समरसेन की ही अन्त में विजय होगी, मैं बहुत प्रसन्न था। मुझे यह भी विश्वास हो गया कि इस तरह देश में अराजकता का दमन कर दिया जायगा, और शान्ति की स्थापना होगी। उस हालत में किसी को भी, नरवाहन की कुटिल राज-नीति के कारण कठिनाइयाँ नहीं उठानी पड़ेंगी। सब जगह अमन और चैन का वातावरण बन जायगा। जनता का कल्याण होगा।

मैं यह सोच ही रहा था कि मुझे शत्रुओं का हाहाकार कर, मैदान छोड़कर भागना दिखाई दिया। भागते हुए शत्रुओं को समरसेन के घुड़-सवार अपने भालों का निशाना बना रहे थे। पदाति, घायल सैनिकों की मरहम पट्टी कर रहे थे। कई पास बहनेवाले नाले में जाकर अपनी प्यास बुझा रहे थे।

मैंने बुर्ज से उतरकर, नगर के फाटकों को खुलवाने की सोची। विजयी समरसेन की सेना का स्वागत करने की जिम्मेवारी मुझ पर थी। मैं बुर्ज से उतर ही रहा था कि मुझे यकायक 'जय जयकार' की जगह सेना का हाहाकार सुनायी पड़ने लगा। मेरी कुछ समझ में नहीं आया।

मैं हैरान होकर झट वहीं खड़ा रह गया। युद्ध-भूमि में, ऊँची जगह के चारों ओर सैनिक घूमने लगे। मैं अभी सोच ही रहा था कि यह क्या विचित्र घटना है कि दस घुड़-सवार अपने घोड़ों पर सवार हो, नगर के द्वार की ओर सरपट दौड़ने लगे। उनको पहिचानना मुश्किल हो गया।

मैं घबरा गया। मैंने सोचा कि शायद कोई दुर्घटना घट गयी है! यह भी सोचा कि ये दस घुड़-सवार, जो नगर के द्वार की ओर भागे आ रहे थे, जरूर सन्देश-वाहक होंगे। मैं जल्दी जल्दी बुर्ज पर से उतरा, अपने सिपाहियों को साथ लेकर, घोड़े पर सवार हो, नगर-द्वार के पास गया। मैंने द्वार खुलवा दिये।

द्वार खुलते ही दस घुड़-सवार, तेज़ी से आगे बढ़े और नगर में घुसते ही,

"नरवाहन महाराज की जय" चिल्लाने लगे। मुझे तुरन्त मालूम हो गया कि कोई धोखा दिया जा रहा है। "ये बागी हैं। मारो इनको। काटो। इनको अन्दर आने मत दो।" कहते कहते मैंने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया, और दो बागियों को तलवार से वहीं ख़तम कर दिया। मेरे सिपाही भी, बाकी आठ घुड़-सवारों का मुकाबला करने लगे।

गली में खड़े सैनिक और हथियार-बन्द लोग एक क्षण के लिए स्तब्ध खड़े रह गये। फिर उनमें से कुछ सैनिक "नरवाहन मित्र की जय," चिल्लाते चिल्लाते, तलवार निकाल कर आगे बढ़ गये।

हथियार-बन्द आदमियों में भी खलबली मची। उनमें से कुछ नौजवान आगे बढ़कर "समरसेन की जय" चिल्लाने लगे— और सैनिकों से मुक़ाबला करने लगे। खून बहने लगा।

तब जो गड़-बड़ी व मार-काट हुई, उसको युद्ध नहीं कहा जा सकता। हर हथियारवाले को दूसरा हथियारवाला शत्रु लगता था। उन्हें यह भी न मालूम था कि जिनसे वे लड़ रहे थे, वे मित्र थे या शत्रु। कई समरसेन का 'जय जयकार' कर रहे थे, और कई नरवाहन का। इस शोर-शराबे में, यह भी जानने का समय न था कि किसके मुँह से, समरसेन निकल रहा था, और किसके मुँह से नरवाहन। शत्रु-मित्र का भेद करना मुश्किल था। दंगा-फ़साद चल रहा था।

मैं लड़ता लड़ता, सिपाहियों के साथ, धीमे धीमे राज महल के द्वार की ओर बढ़ा। द्वार-रक्षक मेरे ही सिपाही थे। उन्होंने मुझे देखते ही द्वार खोले, और मेरे अन्दर जाने के बाद दरवाज़े फिर से बन्द कर दिये।

बाहर, गलियों में खूब लड़ाई-झगड़ा हो रहा था। उनमें कुछ समरसेन की तरफ थे, और कुछ नरवाहन की ओर। जब तक यह नहीं मालूम हो जाता कि युद्ध क्षेत्र में क्या हो रहा है, यह दंगा-फ़साद यूँ ही चलता रहेगा। मैंने एक सिपाही को खुफ़िया रास्ते से, युद्ध-क्षेत्र में जाकर सारा वृत्तान्त जानने के लिए भेजा। और अब यह भी पता लगाना था कि नरवाहन के अनुयायी आगे क्या करना चाहते थे। सामने समस्या यह थी कि क्या वे—लोगों से मुक़ाबला करने के बाद क़िले को भी घेरेंगे? चाहे कुछ भी हो, मैंने जी-जान से राज महल की रक्षा करने का निश्चय किया। मैं यह जानता था कि मेरे साथ के थोड़े बहुत सैनिक, और राज महल के चालीस-पचास सैनिक, बहुत देर तक शत्रु का मुक़ाबला न कर सकेंगे। और जब कोई रास्ता न हो, तो मुझे सिर्फ़ हिंस्र जन्तुओं को फिर पिंजड़ों से बाहर कर देना ही अच्छा उपाय-सा लगा।

एक घंटा बीत गया। गलियों में अब भी गड़बड़ी मची हुई थी। खुफ़िया रास्ते से भेजा सैनिक भी वापिस आ गया। वह जो बुरी

खबर लाया, उससे मेरे हृदय को बहुत दुःख हुआ। ऐसा लगा जैसे किसी ने भाला भोंक दिया हो। मैं सहसा मूर्छित-सा हो गया।

शत्रुओं से मुक़ाबला करते करते समरसेन बुरी तरह घायल हो गया था। फिर क्या था, उप सेनानी नरवाहन ने अपने को सेनापति और कुण्डलिनी द्वीप का राजा घोषित कर दिया। यह घोषणा सुनाने के लिए उसके कुछ अनुयायी शहर में भागे भागे आये थे।

"समरसेन की हालत कैसी है? क्या वे बात कर सकते हैं कि नहीं?" मैंने उतावलेपन से उस सैनिक से पूछा।
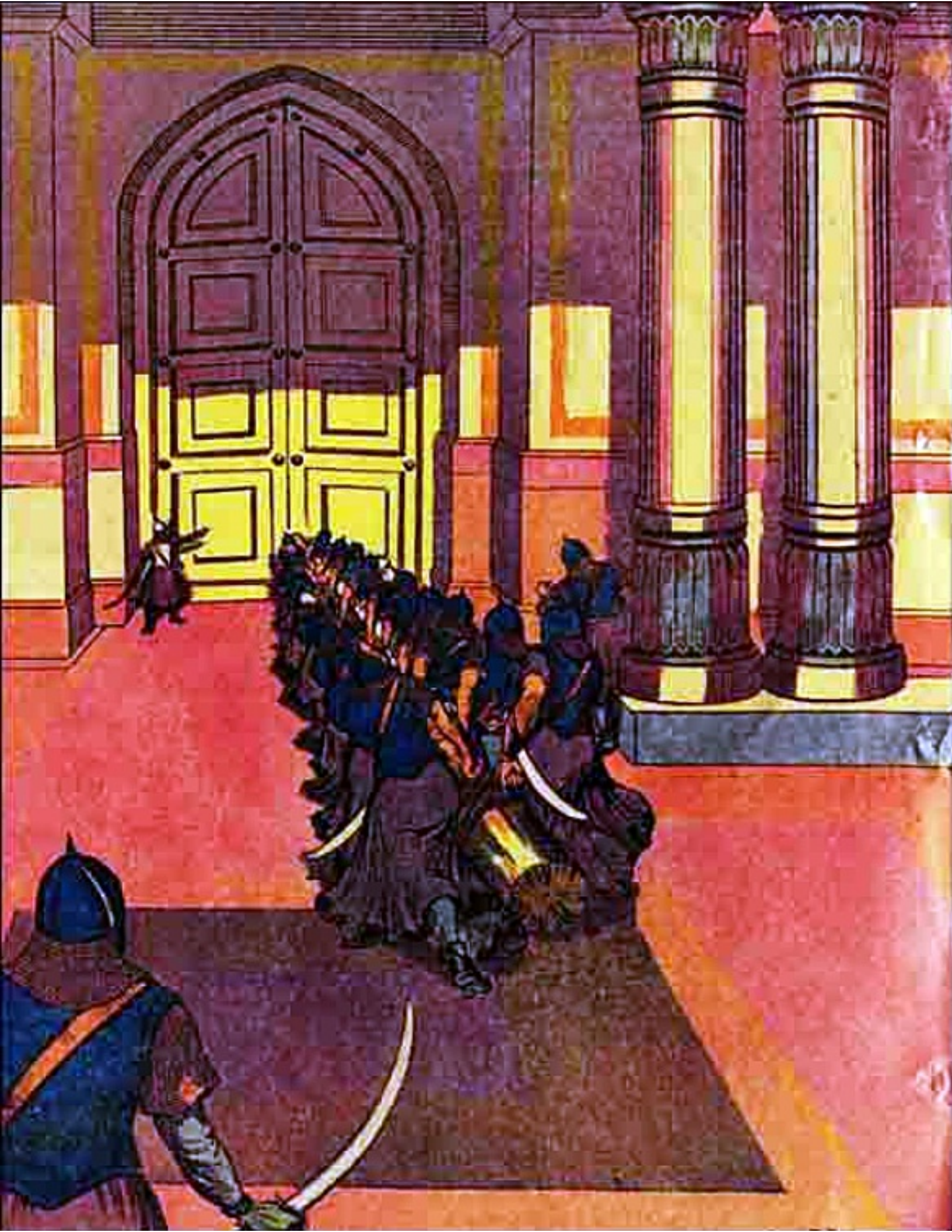
"वे बुरी तरह घायल पड़े हैं। अब और तब की बात है। यही मौका देखकर ही नरवाहन ने अपने को राजा घोषित कर दिया था। सेना में जितने भी छोटे छोटे सरदार हैं, सब उसी का साथ दे रहे हैं।" सैनिक ने बताया।

मैं समझ गया था कि हालत अब काबू के बाहर है। थोड़ी देर में नरवाहन स्वयं अपनी सेना के साथ नगर में प्रवेश करेगा। तब कुण्डलिनी द्वीप में भला उसका कौन मुक़ाबला कर सकता था! मैं यह भी जानता था कि वह मुझसे कितना चिढ़ा हुआ था। इन परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए मैंने सोचा कि खुफ़िया रास्ते से राज महल को छोड़कर बाहर चले जाने में ही भलाई है। नहीं तो हमें नरवाहन क़ैद कर लेता या मरवा देता।

मैंने अपने सिपाहियों को एक जगह बुलाकर उनको मौजूदा हालत समझायी। वे भी मेरे निश्चय से सहमत थे। बस, अब हमें इतना ही करना था कि चुपचाप खुफ़िया रास्ते से बाहर निकल आयें। नरवाहन भी जानता था कि राज महल से गुप्त मार्ग से बाहर जाया जा सकता था। इसलिये बहुत होशियारी से काम करना था। मैं अपने सिपाहियों को लेकर खास राज महल में घुसा। मेरे कुछ दूर आते ही, द्वार की ओर से शोर-शराबा सुनाई पड़ने लगा। पीछे मुड़कर देखा तो नरवाहन के कुछ अनुयायी, द्वार के लोहे के सींखचों को तोड़ने-काटने का प्रयत्न कर रहे थे। वे अन्दर घुसने की कोशिश में थे।

मुझे झट एक उपाय सूझा। पहिले की तरह, मृगशालाधिपति को बुलाकर मैंने, हिंस्र जन्तुओं को पिंजड़ों से बाहर निकाल देने के लिए कहा। उसने मुस्कराते हुए

मेरी तरफ देखते हुए कहा—"मैं नहीं जानता कि आपके शत्रु कौन हैं, पर वे आप से अधिक अक्लमन्द मालूम होते हैं। घंटा भर पहिले, वे ठीक तरह खा-पी रहे हैं कि नहीं, यह जानने के लिये मैं पिंजड़ों के पास गया। मुझे यह देखकर अचरज हुआ कि उनमें से कई मर चुके थे। कई दर्द के मारे कराह रहे थे। यह है हालत जन्तुओं की। मैं नहीं जानता कि यह किसकी करतूत है।"

मैं बिना कुछ कहे, पिंजड़ों की ओर भागा। मृगशालाधिपति ने सच ही बताया था। तो क्या इस मृगशालाधिपति ने ही जन्तुओं को ज़हर दिया था! या नरवाहन के किसी और अनुयायी ने! उस थोड़े समय में मैं यह न जान सका कि यह करतूत किसकी थी। समय न था। फिर भी मैंने मृगशालाधिपति के हाथ बँधवाकर एक कमरे में उसको डलवा दिया। तब हम गुप्त-मार्ग की ओर जल्दी जल्दी भागे।

गुप्त द्वार महाराजा चित्रसेन के शयनागार में था। वहाँ से एक तंग सुरंग जाती थी—क़िले की चारों ओर की खाई को पार कर, एक कोस दूर बाद, जंगल में, एक बड़े पेड़ के थाल में वह सुरंग निकलती थी।

शयनागार में घुसते ही मुझे और मेरे सैनिकों को महाराजा चित्रसेन की लाश का ख्याल आया। अफ़सोस, उनकी लाश, अभी तक किसी कमरे में पड़ी हुई थी। अभी तक उसका दहन-संस्कार न हो सका था। उनका राज्य और जीवन सब दुखान्त था। हम भी तब क्या कर सकते थे!

गुप्त-द्वार खोलकर आगे की ओर हमने देखा। सब जगह घना अन्धकार था।

(अभी और है)

मछली पकड़ते पकड़ते....

कान्तिकवि की आँखें खुलीं
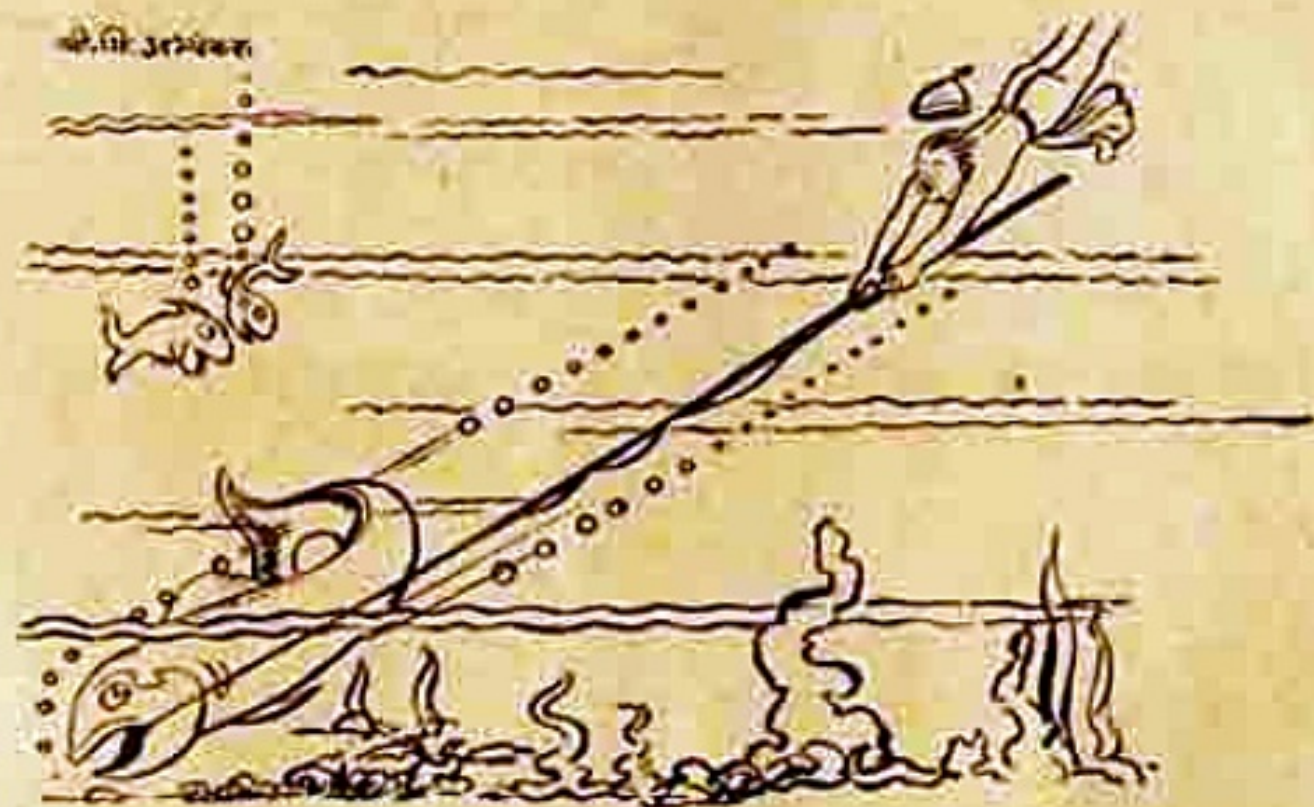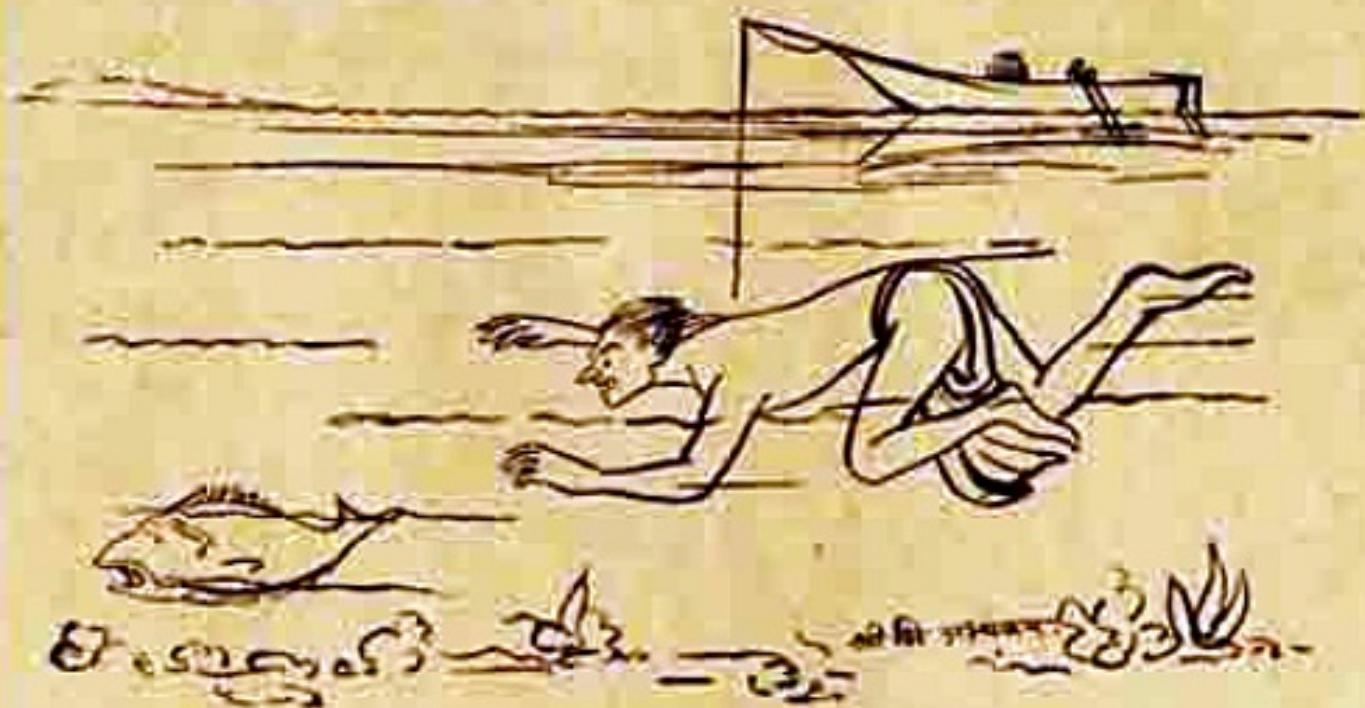
यह बात सर्वत्र फैली हुई थी कि राजा भोज के दरबार में कालिदास जैसे दिग्गज विद्वान और कवि थे। लोगों की यह भी धारणा थी कि धारा नगर में मामूली आदमी भी कविता कर लेते थे। कान्ति कवि नाम का एक उद्दण्ड पंडित स्वयं यह जानना चाहता था कि यह ख्याति कहाँ तक सच है।

कान्ति कवि धारा नगर में पहुँचा ही था कि पानी के कलश भर कर, कुछ स्त्रियाँ जाती हुई दिखाई दीं। कान्ति कवि ने एक लड़की से पूछा—"तुम कौन हो!" उस लड़की ने यों जवाब दिया:

"हर हर स्मरते नित्यं,
बहुजीव प्रपालकः
अरण्ये वसते नित्यं
तस्याहं कुल बालिका."

("हमेशा जंगलों में रहनेवाले; "हर हर" भजनेवाले, जीव मात्र का पोषण करनेवाले की मैं पुत्री हूँ।)

वह किसान की लड़की थी। किसान जंगल में खेती करते हैं, बैलों को "हर हर" कह हाँक कर ज़मीन जोतते हैं।

इस बीच में एक और स्त्री उस तरफ़ आयी। उससे भी कान्ति कवि ने पूछा—"तुम कौन हो!" उसने इस प्रकार जवाब दिया:

"चतुर्मुखो न च ब्रह्मा,
वृषारूढो न शंकरः
अकाले वर्षते मेघः
तस्याहं कुल बालिका."

(चार मुँह हैं, पर ब्रह्मा नहीं है। उसका वाहन है, बैल। पर वह शिव नहीं है। अकाल मेघ बरसाता है। मैं उसकी लड़की हूँ।)

श्री बालमुकुन्द शास्त्री

यह भिश्ती की लड़की थी। भिश्ती, बैलों पर मशकें लाद कर ले जाते हैं। जो कोई पानी माँगता है, उसे देते हैं। कान्ति कवि यह सुन हैरान रह गया। एक और स्त्री ने इस तरह अपना परिचय दिया :

"निर्जीवो जीवितो वापि
श्वासोच्छ्वास विशेषतः
कुटुम्ब कलहो नास्ति
तस्याहं कुल बालिका।"

(मैं एक ऐसे लोहार की लड़की हूँ, जो एक ऐसी चीज़ से काम करता है, जो जीवित नहीं है, पर जीवित वस्तु की तरह साँस लेती है, यानी धौंकनी।)

एक और स्त्री ने यों कहा :

"द्विराजा, नगरी एका
नित्यं युद्धं च जायते
चतुरस्ति कटोयस्तु
तस्याहं कुल बालिका."

(एक नगर के दो राजा हैं—हमेशा उनमें संघर्षण होता रहता है, अर्थात् दो चक्कोंवाला चरखा, उसके बनानेवाले बढ़ई की बेटी हूँ मैं।)

एक और लड़की ने यों कहा :

"चक्रैक सारथी सूर्यो
भूमौ चरति सारथिः
अगस्त्यतात निर्माणः
तस्याहं कुल बालिका।

(एक ही चक्र है। परन्तु सवारी करने वाला सूर्य नहीं है। सारथी भूमि पर ही रहता है। अगस्त्य के पिताओं के बनाने वाले कुम्हार की लड़की हूँ मैं।)

धारा नगर के मामूली परिवार की लड़कियों की यह प्रतिभा, पांडित्य, वाक् चातुर्य देखकर, कान्ति कवि को आश्चर्य हुआ। उसे विश्वास हो गया कि राजा भोज के बारे में जो बातें कही जा रही थीं, उनमें कोई अतिशयोक्ति न थी।

जानी दुश्मन

उन दिनों गढ़ा नगर का उग्रभट राजा था। उसकी पत्नी का नाम मनोरमा था। पति-पत्नी बड़े प्रेम से रहा करते थे।

एक दिन दूर देश से कोई नाटक-मंडली नगर में आई। उस मंडली ने राजा के सामने "समुद्र मंथन" नामका नाटक खेला। देवता और दानवों के सम्मिलित होकर दुग्ध सागर का मंथन करने के पश्चात, विष्णु ने मोहनी रूप धारण कर अमृत बाँटा। यह पात्र मंडली के मुखिया की लड़की लास्यवती ने खेला था। लास्यवती सचमुच मोहिनी थी । उसका सौन्दर्य, अभिनय, आदि देखकर उग्रभट मुग्ध हो गया। नाटक मंडली के मुखिया से उसने कहा कि वह उसकी शादी उससे करे। वह तुरत मान गया। लास्यवती गढ़ा नगर के राजा की छोटी रानी बन गई।

थोड़े दिनों बाद, मनोरमा को एक लड़का, और लास्यवती को एक लड़का पैदा हुआ। राजा ने मनोरमा के लड़के का नाम भीमभट, और लास्यवती के लड़के का नाम समरभट रखा। दोनों में भीमभट कुछ बड़ा था।

दोनों राजकुमार बड़े होने लगे, पर यह देखा गया कि हर विषय में भीमभट ही समरभट से आगे रहता। यह देख समरभट अपने भाई से ईर्ष्या करता। जब वे दोनों एक दिन कुश्ती लड़ रहे थे, तो समरभट ने जानबूझकर, भीमभट के गालों पर मुक्का मारी। फिर भीमभट ने, जो वस्तुतः उससे अधिक बलवान था, उसकी मरम्मत कर दी। समरभट के मुख और नाक से खून बहने लगा। वह नीचे गिर गया। उसे, दोस्त उठाकर उसकी माँ के पास ले गये।

श्री नरेन्द्रकुमार अग्रवाल

लास्यवती, लड़के की हालत देखकर खूब रोयी-चिल्लाई। इतने में राजा भी आया और उसने सारी बात मालूम कर ली।

"भीमभट, मेरे लड़के को, जब कभी मौका मिलता है, पीटता रहता है। मैंने आपसे कभी न कहा। मुझे डर है कि वह कभी न कभी मेरे लड़के को मार देगा।"—लास्यवती ने रोते रोते राजा से कहा।

राजा को अपनी छोटी रानी पर और उसके लड़के पर अधिक प्रेम था। इसलिये उसने अपने बड़े लड़के को आज्ञा दी कि वह राजमहल छोड़कर चला जाय।

यह सुन बड़ी रानी मनोरमा की आँखों में आँसू आ गये। भीमभट से कहा—"बेटा, तेरे बारे में छोटी रानी और उसका लड़का चुगली करते हैं, राजा उन पर विश्वास कर लेते हैं। इसलिये तेरा यहाँ रहना अच्छा नहीं है। महल छोड़ किसी और के घर में रहने की तुझे क्या पड़ी! अपने नाना के घर रह। उनके सन्तान नहीं है, इसलिये तुझे बड़े प्रेम से रखेंगे।"

भीमभट को यह सुनकर क्रोध आया। उसने कहा—"माँ, यह क्या कह रही हो! क्या समरभट के डर से मैं देश छोड़कर चला जाऊँ! क्या मैं क्षत्रिय का लड़का नहीं हूँ! वह मेरा कुछ नहीं कर सकता!"—

"ऐसी बात है तो तू जितना भी धन चाहे मैं देने के लिये तैयार हूँ। जितनी सेना तुझे चाहिये, तू इकट्ठी कर ले। मैं तेरी मदद करूँगी।"—मनोरमा ने कहा।

"नहीं माँ। ऐसा करना मुझे राज-द्रोह सा लगता है।" कहते हुए भीमभट ने माता से विदा ली, और वह अन्तःपुर छोड़ कर चला गया।

जब जनता को यह मालूम हुआ कि राजा ने अपने बड़े लड़के को घर से बाहर कर दिया है तो राजा की वे निन्दा करने

लगे। क्योंकि जनता भलीभाँति जानती थी कि समरभट किसी भी तरह राजा बनने लायक न था। इसलिये जनता ने आपस में चन्दा इकट्ठा कर, भीमभट के रहने की हर सुविधा कर दी।

भले ही प्रजा भीमभट को चाहती हो, पर समरभट को राजा चाहता था। इसलिये उसने अपने भाई को मरवाने के लिए कई पैंतरे खेले। यह देख शंखदत्त नाम के ब्राह्मण को बहुत रंज हुआ।

शंखदत्त की उम्र भी राजकुमारों की उम्र जितनी थी। यद्यपि वह ब्राह्मण था, पर वह बहुत पराक्रमी था। वह दोनों राजकुमारों का मित्र था। इसलिये उसने एक दिन समरभट से कहा—"क्यों तू अपने भाई से झगड़ता है! तू उसको जीत नहीं सकता। अगर तू उसका बुरा करेगा, व्यर्थ तेरी ही अपकीर्ति होगी। अब तक जो तूने किया है, उसकी प्रजा कैसे निन्दा कर रही है, क्या तू नहीं जानता!"—उसने उसे समझाया-बुझाया।

यह बात सुन समरभट का रास्ते पर आना तो अलग, वह उसको उल्टा खरी-खोटी सुनाने लगा।

"खैर, मैंने तुझे अच्छी सलाह दी, और तुझे वह ज़हर-सी लगी। अगर भीमभट तेरा जानी दुश्मन है, तो मुझे भी जानी दुश्मन समझ। क्योंकि मैं आज से तेरा मित्र नहीं हूँ। दोनों को मित्र समझ कर मैंने सलाह दी थी और तूने मुझे ग़लत समझा। इसका फल तुझे भोगना पड़ेगा।" शंखदत्त यह कहकर चला गया।

इस घटना के कुछ दिनों बाद, राढा नगर में एक व्यापारी पंच कल्याणी घोड़ा बेचने आया। यह पता लगते ही शंखदत्त ने भीमभट के लिए उसका भाव-ताव किया। यह बात समरभट तक भी पहुँची। अपने नौकर-चाकरों के साथ, व्यापारी के पास जाकर उसने कहा—"तेरा घोड़ा मैं दुगने दाम देकर खरीदूँगा। मुझे दे दे।"

"हुज़ूर! हमें व्यापार में ईमान्दारी बरतनी चाहिये। जब एक को भाव दे दिया है तो पैसे के लालच में उसे किसी और को नहीं बेच देना चाहिये। आप ही बताइये!"—व्यापारी ने कहा।

"तुम इतने ईमान्दार हो! अरे, देखते क्या हो? घोड़े को भगा ले जाओ।"—उसने नौकरों को हुक्म दिया। वे घोड़ा खोलकर ले गये।

यह बात भीमभट और शंखदत्त को भी मालूम हुई। वे दोनों तलवार लेकर पहुँचे। समरभट के नौकरों में और उनमें युद्ध हुआ। दोनों ने मिलकर नौकरों को मार दिया। समरभट भी अपनी जान बचाकर, मैदान छोड़कर भागने लगा। पर शंखदत्त ने उसको दौड़कर पकड़ लिया। उसके बाल पकड़कर वह उसका सिर काटने को ही था कि भीमभट ने आगे बढ़कर परिहास करते कहा—"उसे मत मारो। फिर हमारे पिता जी का क्या होगा? अब है ही उनका एक लड़का।" शंखदत्त ने "जा, बची तेरी जान" कहकर उसे छोड़ दिया। समरभट ने अपने पिता के पास जाकर शिकायत की कि भीमभट ने उसके नौकरों को मार दिया है, उसको भी मारना चाहा था, और उसका खरीदा हुआ पंच-कल्याणी भगाकर ले गया है।

यह बात मालूम होते ही, मनोरमा ने एक हँडिया में कुछ रत्न रखे, और उस हँडिया को एक ब्राह्मण को देकर कहा—"यह बिना किसी के जाने, मेरे लड़के के पास पहुँचा देना, और उससे कहना कि मैंने कहा है कि वह आज ही, यह देश छोड़ कर मेरे पिता के देश चला जाय। कहना कि कल वह इस राज्य में रहा तो उसके प्राण न बचेंगे। इस धन का वह अपना बदला लेने के लिए उपयोग कर सकता है।"

भीमभट, माँ के कथनानुसार उसी रात को निकल पड़ा। वह हँडिया लेकर पंच-कल्याणी पर सवार हो गया। उसके दुःख-सुख में साथ देनेवाला शंखदत्त भी एक और घोड़े पर चढ़ उसके साथ साथ ही निकला। सबेरे होते होते दोनों शहर से बाहर निकल गये।

अगले दिन वे दुपहर को एक मैदान में पहुँचे। वहाँ सरकंडे खूब बढ़े हुए थे। जब उनके घोड़े उनमें से दौड़ने लगे, तो उनकी आवाज़ सुन, वहाँ सोते शेर जाग उठे, और उन पर हमला करने लगे। भीमभट और शंखदत्त ने बहादुरी से शेरों को मार दिया। पर चूँकि शेरों के हमले से उनके घोड़े बुरी तरह घायल हो गये थे, इसलिए वे देखते देखते वहीं मर गये।

उन्हें पैदल जाना पड़ा। सरकंडों के कारण पैर कट रहे थे। उनको यह भी न मालूम था कि वहाँ कितने और शेर थे। फिर अन्धेरा भी हो रहा था। वे चलते गये। रात भर चलने के बाद वे गंगा नदी के किनारे पहुँचे।

गंगा भरी हुई थी। आसपास कोई नहीं दिखाई देता था। नदी पार करने के लिये भी वहाँ कुछ न था। किनारे पर चलते चलते, थोड़ी दूर पर उनको एक कुटीर दिखाई दिया। उसमें केवल एक युवक था। मालूम हुआ कि युवक ने काशी में पढ़ा-लिखा था। जब वह पढ़-लिखकर अपने गाँव में पहुँचा तो भाई-बन्धु, सब मर मरा चुके थे। बेचारे अनाथ, गरीब
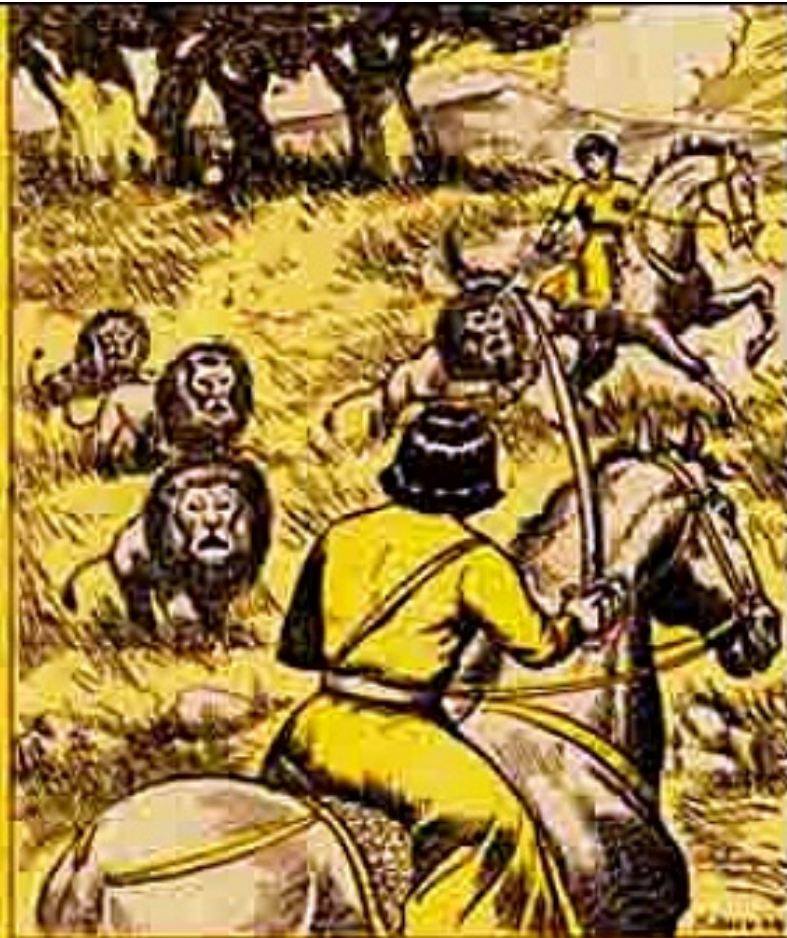
को कौन अपनी लड़की विवाह में देता! इसलिये उसे वैराग्य हो गया और वहाँ एक कुटीर बनाकर, वह तपस्या कर रहा था।

यह जानकर, भीमभट ने रत्नों से भरी हँडिया उसको देकर कहा—"जाओ, तुम इसे ले जाकर आराम से विवाह करो, हमारे लिये इसका ढोना मुश्किल हो रहा है।"

इसके बाद, दोनों मित्रों ने हिम्मत कर, गंगा तैरकर पार करना चाहा। पर बहाव बहुत तेज़ था, बहाव के साथ वे भी बहने लगे। बहुत दूर बह जाने के बाद, भीमभट

पहले किनारे पर लगा। शंखदत्त कहीं दिखाई नहीं देता था। न जाने वह क्या हो गया था। उसको नदी किनारे खोजता खोजता, वह लाट देश पहुँचा।

इस तरह माँ, मातृ-भूमि, राज्य, धन, मित्र को छोड़कर, भीमभट ने निस्सहाय हो लाट नगर में पैर रखे ही थे कि उसको कुछ युवक जुआ खेलते हुये नज़र आये। भीमभट भी उनसे जुआ खेलने लगा। उनका ख्याल था कि जो कुछ उसके पास था, वे उसको जीत लेंगे, पर हुआ उल्टा ही। भीमभट ने थोड़ी देर में उनका सब कुछ जीत लिया। सब जुआड़ी थे। उनसे भीमभट ने कहा—"दोस्तो! मैं कोई जुआखोर नहीं हूँ। अपना धन लेते जाओ।"

"तो तुमने हम से जुआ क्यों खेला?"—उन्होंने पूछा।

"मैं अकेला हूँ। आपसे मैत्री करने के उद्देश्य से ही मैंने ऐसा किया है।"—भीमभट ने कहा। यह सुन वे सन्तुष्ट हुए। वे उसके दोस्त भी बन गये।

कुछ समय बीता। लाट देश में प्रति वर्ष नागोत्सव मनाया जाता था। भीमभट

भी अपने मित्रों के साथ उत्सव देखने गया। वहाँ उसे उस देश की राजकुमारी दिखाई दी। भीमभट को उसके साथ विवाह करने की इच्छा हुई।

यह जान उसके दोस्तों ने, भीमभट को राजा की पोशाक पहिनाई और स्वयं सामन्तों की वेषभूषा धारण कर राजा को देखने गये। जब राजा को यह मालूम हुआ कि भीमभट राढ़ा देश के राजा का लड़का है, तो वह बहुत खुश होकर तुरत मान गया और अपनी लड़की की उससे धूमधाम से उसने शादी कर दी।

शंखदत्त भी, गंगा पार कर गया, और अपने मित्र को खोजने लगा। जब लोगों के मुँह सुना कि भीमभट ने लाट देश की राजकुमारी के साथ विवाह कर लिया है, तो वह भी उसे खोजता खोजता लाट देश पहुँचा। अपने खोये हुये मित्र को देखकर भीमभट को अत्यधिक आनन्द हुआ।

थोड़ा समय और बीता। लाट देश के राजा के दो लड़कियों के सिवाय, कोई सन्तान न थी। इसलिये भीमभट लाट देश का राजा हो गया। उधर उग्रभट भी मर गया, और समरभट राढ़ा नगर का राजा

बना। भीमभट ने अपने भाई के पास दूत द्वारा यह कहला भेजा—"नीच! तू सिंहासन पर बैठने लायक नहीं है। सीधे ढंग से या तो राज्य मुझे वापस दे दे, नहीं तो युद्ध के लिए तैयार हो जा।"

समरभट युद्ध के लिए तैयार हो गया। भीमभट ने अपने मित्रों से कहा कि वे युद्ध के लिए तैयार हो जायें। उन्होंने अच्छी सेना जमा कर ली। भीमभट ने सेना लेकर राढ़ा नगर पर आक्रमण किया।

घमासान युद्ध हुआ। युद्ध में दोनों भाई भिड़ पड़े। दोनों एक दूसरे के वाहनों को बाणों से छेदने लगे। आपस में बाण काटने लगे। फिर तलवार लेकर लड़ने लगे। थोड़ी देर में, भीमभट ने समरभट के हाथ की तलवार उड़ा दी। भीमभट की तलवार पर समरभट का सीना लगा। वह भय से कांपने लगा।

"डरपोक! मैं तुझे नहीं मारूँगा। अगर मैं तुझे मार दूँ तो तेरी माँ का क्या होगा, जिसने तुझे इतने लाड़-प्यार से पाला पोसा है! जा, जीने जी अपनी शक्ल उसको दिखा आ।"—भीमभट ने कहा।

आखिर भीमभट राढ़ा नगर की गद्दी पर बैठा। उसकी रक्षा के लिए, अपनी जान तक देने को तैयार रहनेवाले अपने मित्रों का उसने आदर किया और लाट देश की दूसरी राजकुमारी से शंखदत्त का विवाह करवाया। उसको लाट देश भी भेंट में दे दिया। बाकी मित्रों को उसने अपने सामन्त बना लिये।

जिस जगह एक समय वह राजा था, समरभट अब एक मामूली आदमी की तरह रहना नहीं चाहता था। वह अपनी माँ के साथ कहीं और जगह चला गया।

संजीवनी मंत्र

विक्रमार्क, पेड़ पर से फिर शव को उतार कर और कन्धे पर डालकर, सन्यासी की तरफ चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने राजा से कहा—"राजा, तुम्हारी क्या बुरी हालत हुई है! तुम्हारा मन बहलाने के लिये मैं एक कहानी सुनाता हूं। सुनो"

यमुना नदी के किनारे ब्रह्मस्थल नामक ब्राह्मण-ग्राम में अग्निस्वामी नाम का वेदपाठी रहा करता था। उसके एक लड़की थी, नाम था मन्दारवती। वह इतनी सुन्दर थी कि अप्सराओं को भी सौन्दर्य में मात करती थी। वह उसका विवाह करने की सोच ही रहा था कि कहीं से तीन ब्राह्मण युवक आये, और तीनों बढ़ चढ़कर कहने लगे कि वे

वेताल कथाएँ

गयी। तीनों युवक उसकी मृत्यु पर दुःखी हुए और उसके शव को श्मशान ले जाकर, तीनों ने यथाविधि उसका अन्त्येष्टि संस्कार किया। उनमें से एक श्मशान से वापिस न आया। जहाँ मन्दरावती दहन की गयी थी, वहीं उसने एक झोपड़ी बना ली और उसी की चिता की भस्म पर वह रहने लगा। जो कोई कुछ लाकर देता तो उसे खाकर तसल्ली कर लेता। नहीं तो वह वहीं भूखा-प्यासा पड़ा रहता।

दूसरा युवक, मन्दारवती की हड्डियाँ जमा गंगा में मिलाने के लिए निकल पड़ा।

तीसरा युवक पूरी तरह बैरागी बन गया और देश-देशान्तर में घूमने-फिरने लगा। वह घूमता-घूमता एक दिन वक्रोल्क नामक गाँव में पहुँचा। वहाँ एक ब्राह्मण ने उसका अतिथि-सत्कार किया। जब वे भोजन के लिए बैठे, तो घर का छोटा बालक हिचकियाँ भर-भरकर रोने लगा। माँ ने भोजन परोसते परोसते उसको बहुत मनाया-समझाया। पर उसने रोना बन्द न किया। इसलिए घरवाली ने उसको जलते चूल्हे में डाल दिया। वह छोटा बालक देखते देखते चूल्हे में राख हो गया।

मन्दारवती से विवाह करेंगे। यदि वे विवाह न कर सके तो आत्म-हत्या कर लेंगे। वे चारों सौगन्ध खाने लगे। ब्राह्मण यह देखकर हैरान हो गया।

तीनों युवक शिक्षा-दीक्षा में, सौंदर्य, चरित्र, वगैरह में समान थे। इसलिए ब्राह्मण को यह डर सताने लगा कि अगर उनमें से किसी एक को भी वह अपनी पुत्री विवाह में देता है, तो शेष दो आत्म-हत्या कर लेंगे। इसलिए वह चुप रहा।

इधर, मन्दारवती को यकायक भयंकर ज्वर हुआ और वह थोड़े दिनों में ही मर

ब्राह्मण युवक यह सब देख रहा था। वह चिल्लाया—"छी! तुम मनुष्य नहीं हो, राक्षस हो। तुम्हारा आतिथ्य स्वीकार कर मैं भी नरक जाऊँगा"—कहता कहता, वह पत्तल छोड़कर उठ गया।

परन्तु मेज़बान ने कहा—"बेटा! जल्दी मत करो। हम राक्षस नहीं हैं। ऐसी बात नहीं कि हमें अपने बच्चे पर प्रेम नहीं है। क्योंकि उसको फिर जिला देने के लिये, हम मृत संजीवनी मन्त्र जानते हैं; इसलिये मेरी पत्नी ने उसको चूल्हे में डाल दिया है।

ब्राह्मण युवक को विश्वास न हुआ। इसलिये उस ब्राह्मण ने थोड़ी-सी धूल ली, खूँटी पर टंगी एक पुस्तक को निकालकर, उसमें से उसने एक मन्त्र पढ़ा, उस धूल के चूल्हे की राख में छिड़कते ही, वह बच्चा पुनः जीवित हो गया।

ब्राह्मण युवक ने सन्तुष्ट होकर भोजन किया। परन्तु उसका मन खूँटी पर लटकी पुस्तक पर ही था। जब रात को सब सो रहे थे, उसने वह पुस्तक ली, बिना किसी को कहे-सुने, वह श्मशान पहुँच गया।

वह ब्राह्मण युवक भी, जो मन्दारवती की अस्थियाँ गंगा में मिलाने गया था, वापिस आ गया था। दोनों मिलकर तीसरे युवक के पास गये, जो श्मशान में रह रहा था।

उस ब्राह्मण युवक ने जो मृत संजीवनी मन्त्र लाया था, उसके बारे में, दोनों युवकों को भी बताया। उसने फिर चुटकी भर धूल ली, पुस्तक में से मन्त्र पढ़ा, और उस धूल को उस भस्म पर डाल दिया, जिसको तीसरे युवक ने शय्या बना रखा था।

तुरत मन्दारवती स्वस्थ होकर जीवित हो उठी, मानों नींद से जागी हो।

तीनों ब्रह्मचारी उसको साथ लेकर अग्निस्वामी के घर जाकर कहने लगे— "इसका विवाह मुझ से करो" "इसका विवाह मुझ से करो" वे उसे इस तरह तंग करने लगे।

"मैं मृत संजीवनी मन्त्र लाया था, इसलिये मन्दारवती से विवाह करने का अधिकार मेरा है"—एक कहता।

"मैंने उसकी हड्डियाँ ले जाकर गंगा में मिलायीं, उसके जी उठने का यह भी एक कारण है। मुझे ही उससे विवाह करना चाहिये।"—दूसरे युवक ने कहा।

"मैंने ही उसकी राख को सुरक्षित रखा, मैं ही उस पर सोया था, उससे मैं शादी करूँगा'—तीसरे युवक ने कहा।

अग्निस्वामी फिर दुविधा में पड़ा कि किसके साथ अपनी लड़की का विवाह करे। उसे कोई रास्ता न दिखाई दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर राजा से पूछा—"राजन्! उन तीनों में कौन मन्दारवती से विवाह करने योग्य था। वह जो कि मृत संजीवनी मन्त्र लाया था? या वह जो अस्थियाँ गंगा में मिलाने गया था? या वह जिसने उसकी चिता की राख पर सोता था? अगर तुमने जान बूझकर न बताया तो तुम्हारा सिर फोड़ दूँगा"

"मृत संजीवनी मन्त्र के लाने के बावजूद भी प्राण देनेवाला पिता होता है। अस्थियों का गंगा में मिलानेवाला भाई होता है। वह ही सचमुच मन्दारवती का पति है, जो उसकी चिता की राख पर पड़ा रहा और उसको पहिले की तरह प्रेम करता रहा।"—राजा ने कहा।

इस तरह राजा का मौन-भंग होते ही, बेताल शव के साथ भागकर फिर पेड़ पर चढ़ बैठा। विक्रमार्क देखता रह गया।

चालाक माँ-बेटी

उन दिनों हरून अल रशीद बग़दाद का खलीफ़ा था। सारे मुल्क में कबूतरों के ज़रिये डाक पहुँचाई जाती थी। जो यह काम करता था, वह बहुत बड़ा शख्स था। खलीफ़ा उसको अपने लड़के की तरह मानता था। उसको हज़ार दीनार माहवारी देता था। अलावा इसके, उसको कई खिताब भी दे रखे थे।

वह शख्स एक दिन गुज़र गया और कबूतरों द्वारा डाक पहुँचाना भी बन्द हो गया। उसने इस काम के लिए, जो चालीस गुलाम और चालीस शिकारी कुत्ते रख रखे थे, उनको खलीफ़ा ने ले लिए।

कबूतर की डाक चलानेवाले की एक स्त्री थी और एक लड़की। स्त्री का नाम दिलेला था और लड़की का ज़ीनाब। उसने खलीफ़ा के पास दरख्वास्त भेजी कि वह अपने पति की जगह कबूतरों द्वारा डाक भेजने का इन्तज़ाम करेगी, और उसको भी वही वेतन दिया जाना चाहिये, जो उसके पति को मिलता आया था। खलीफ़ा ने उसकी दरख्वास्त रद्द कर दी। वह दिलेला की अक़्लमन्दी को न जान सका।

कुछ दिनों बाद खलीफ़ा ने दो डाकुओं को कोतवाल नियुक्त किया। उनमें से एक का नाम था अहमद, और दूसरे का नाम था हसन। दोनों पहुँचे हुये डाकू थे। परन्तु खलीफ़ा ने यह समझा कि चालाक डाकुओं को अगर कोतवाल बना दिया गया तो डाकू कम हो जायेंगे।

जब दिलेला को यह मालूम हुआ कि उसी खलीफ़ा ने, जिसने उसकी दरख्वास्त रद्द कर दी थी, दो चोरों को कोतवाल बनाया है, वह आग-बबूला हो उठी

कुमारी रज़िया रेहाना

" अगर इस देश में चोर, डाकू डकैतों की ही पूछ होती है, तो क्या हम कोई कम हैं! देखना, ये अहमद और हसन मेरे सामने क्या कर पाते हैं!" दिलैला ने अपनी लड़की ज़ीनाब से कहा।

दिलैला बूढ़ी थी, पर अक़्ल में वह बहुत तेज़ थी। उसकी लड़की ज़ीनाब भी उससे किसी क़दर कम न थी। माँ की प्रतिज्ञा सुनकर वह बहुत खुश हुई। दिलैला ने निश्चय किया कि वह सारे शहर को हिला देगी। उसने सूफ़ी सन्यासिनी का वेष धरकर चेहरे पर बुरका डाल लिया। गले में कई सारे ताबीज़ बांध लिये। हाथ में सूफ़ी भिखारियों की एक छड़ी ले ली। वह घर से निकली।

बग़दाद के बड़े लोगों में से एक ख़लीफ़ा के अंग-रक्षकों का सेनापति भी था; उसका नाम मुस्तफ़ा था। उसको बहुत बड़ा वेतन मिलता था। उसके घर में चन्दन के दरवाज़े थे और उन पर चाँदी के ताले लगते थे। उसकी पत्नी भी बहुत सुन्दर थी। उसका नाम खातून था। यद्यपि वह बाँझ थी, तोभी मुस्तफ़ा उस पर जान देता था। उसने दूसरी शादी भी न की थी। जब वह दूसरों के लड़कों को देखता, तो वह दिल मसोस कर रह जाता।

परन्तु हमेशा खातून को यह फ़िक्र सताती रहती कि वह बाँझ है। वह यह भी जानती थी कि उसका पति बच्चों के लिए तड़प रहा है। सन्तान के लिए उसने कितनी ही दवा-दारू करवायी, पूजा-पाठ करवाये, पर कुछ फ़ायदा न हुआ।

दिलैला "अल्लाह! अल्लाह!!" चिल्लाती गली-गली फिरती थी। जब वह मुस्तफ़ा के घर के पास पहुँची, तो उसे मकान के दूसरे मँज़िल पर खातून दिखायी दी।

वह बहुत-सारे गहने पहिने दुल्हिन-सी लगती थी! "अगर मैं इस लड़की को उठाकर न ले गयी और मैंने इसके गहने न हथिया लिये, तो मेरी अक्ल भी किस काम की....!" दिलैला ने सोचा।

दिलैला को देखते ही खातून के मन में भी आशा पैदा हुई। इस सूफ़ी सन्यासिनी के दर्शन से शायद उसको सन्तान-प्राप्ति हो जाय....! यह सोचकर खातून ने अपनी दासी को उसे बुलाने के लिए भेजा।

दिलैला के ऊपर आते ही, खातून उसके पैरों पर पड़ अपना रोना रोने लगी। दिलैला ने कहा—"इसी शहर में सन्तान प्रदान करनेवाला एक साधु है। अगर तूने उसके एक बार दर्शन किये, तो तेरी इच्छा-पूर्ति के लिए वह कुछ न कुछ बतायेगा।"

"मैं तो कभी भी घर से बाहर नहीं गयी हूँ।"—खातून ने कहा।

"खैर! तू मेरे साथ अभी आ जा; मैं तुझे साधु के पास ले जाऊँगी। तेरे पति के घर वापिस आने से पहिले तू यहाँ आ सकती है।"—दिलैला ने सुझाया।

यह सोचकर कि उसकी इच्छा पूरी होने जा रही है, खातून ने अपने और

गया है; इसलिए तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं होगा। ढेर-सा दहेज दूँगी।"—दिलैला ने मोहसिन से कहा।

मोहसिन बड़ा खुश हुआ—"तो क्या शादी यहीं निश्चित कर लें?" उसने पूछा। दिलैला ने कहा कि अगर वह उसके साथ आया तो उसकी शादी तुरंत निश्चित की जा सकती है। मोहसिन हज़ार दीनारों से भरी एक थैली लेकर उसके साथ साथ चल दिया।

दिलैला, जब इस तरह खातून, मोहसिन को साथ लेकर जा रही थी, तो उसे रंगरेज़ हज़ मोहम्मद की दुकान दिखाई दी। दिलैला ने खातून और मोहसिन को दूर खड़ा कर उससे कहा—"ये जो आपको दिखाई दे रहे हैं, ये मेरे लड़के और लड़की हैं। हमारा घर गिरनेवाला था, इसलिये उसकी मरम्मत की जा रही है। यहाँ कोई खाली मकान मिलेगा? हम पाँच-दस दिन ठहरना चाहते हैं"।

उसने सोच-विचारकर कहा—"हमारे घर का उपरला हिस्सा खाली है। मैं नीचे रहता हूँ। नील के व्यापारियों के ठहरने के लिये मैंने वह हिस्सा खाली छोड़ रखा

गहने भी पहिन लिए और दिलैला के साथ निकल पड़ी। जब वे थोड़ी दूर गयीं, तो उन्हें सिदी मोहसिन की दुकान दिखायी दी। वह नौजवान था, उसकी अभी शादी भी न हुई थी। दिलैला को एक चाल सूझी। उसने खातून को बाहर बराण्डे में बैठाया और खुद अन्दर चली गयी।

"यह जो खूबसूरत औरत दिखायी दे रही है, वह मेरी लड़की है। तुम जैसे अक़लमन्द को देखकर उसकी शादी करने की मेरी मर्ज़ी हो रही है। उसका पिता व्यापार में खूब कमाकर उसे बहुत-कुछ दे

है। आजकल वे नहीं हैं। अगर चाहिये तो ले लो। ये रहीं चाबियाँ।"—उसने कहा।

दिलैला तब बाकी व्यक्तियों को साथ लेकर हज मोहम्मद के घर गई। निचला हिस्सा खोलकर उसने मोहसिन को अन्दर जाने का इशारा किया। वह खातून के साथ ऊपरले हिस्से में चली गई।

"मैंने जिस साधु के बारे में कहा था वह यहीं नीचे रहता है। मैं जाकर तेरे बारे में उसको बताकर आती हूँ। इस बीच में अपने गहनों की गठरी बाँधकर साधु का दर्शन करने के लिये तैयार रह। उनके पास गहने पहिन कर जाना गुनाह है।"—दिलैला यह कह नीचे चली गई।

मोहसिन ने उसको देखते ही पूछा—"क्या शादी तय हो गई है!"

दिलैला झटमठ रोने लगी। उसने कहा—"मैं क्या करूँ! किसी धूर्त ने तेरे बारे में उससे चुगली कर दी है। कह दिया है कि तुझे दाद है। वह तुझसे अब शादी नहीं करना चाहती। तू अपना कुर्ता उतारकर बैठ जा। उसे लाकर तुझे दिखाऊँगी, और शादी के लिये मना लूँगी। तू अपना थैला और कुर्ता मुझे दे दे। ऊपर हिफ़ाज़त से रख दूँगी।"

मोहसिन ने दीनारों की थैली और कुर्ता उसको सौंप दिया। उसने ऊपर जाकर खातून से कहा—"तेरे लिये साधु इन्तज़ार कर रहा है। तेरा भाग्य जान ले, अब जग गया है। मैं तेरी गहनों की गठरी रखकर अभी आती हूँ।" खातून नीचे उतरकर अन्दर गई। दिलैला उसके पीछे पीछे दोनों गठरियाँ लेकर उतरी, और सीधे गली में चली गई।

खातून ने कमरे में देखा। उसे साधु तो कहीं न दिखाई दिया। परन्तु कुर्ता उतारे मोहसिन वहाँ बैठा था। उसने उसे

देखते ही कहा—"देख ले मेरे शरीर पर एक भी दाद नहीं है।" खातून डर गई और ऊपर भागकर अन्दर से कमरा बन्द कर लिया। उसको वहाँ न सूफ़ी सन्यासिनी दिखाई दी, न गहनों की गठरी ही।

इस बीच में, दिलैला गठरियों को जान-पहिचान के एक दुकानदार के पास रखकर रंगरेज़ की दुकान पर गई। "घर बड़ा अच्छा था। आपने हमारी बड़ी मदद की। दोनों बच्चों को भूख लग रही है। ज़रा उनके लिये कुछ ले आ सकोगे ! यह लीजिये एक दीनार। आप अपने खाने के लिये भी कुछ खरीद लीजियेगा। मैं घर जाकर सामान बँधवाकर लिवा लाती हूँ।"

हज मोहम्मद दुकान पर एक नौकर को बिठाकर चल पड़ा। दिलैला भी अपनी छुपाई गठरियों को लेकर थोड़ी देर में वापिस आ गई। उसने नौकर से कहा—"तेरा मालिक उस ढाबे में है। तुझे तुरन्त बुला रहा है। तेरे वापिस आने तक मैं रहूँगी।" नौकर भी चला गया।

दिलैला ने, दुकान में जो कुछ समान लेने लायक था, चुनकर एक तरफ़ रख दिया। दूकान के सामने गधे हाँकता ले

जानेवाले लड़के को देखकर उसने कहा—"तू तो दुकानदार को जानता ही होगा। वह मेरा लड़का है। कर्जवाले मेरे लड़के को पकड़कर ले गये हैं। यह समान दूसरों का है। उनको वापिस दे देना है। यह सामान अपने गधे पर ढोकर मेरे साथ चलेगा न! यह ले एक दीनार। मेरे वापिस आते आते तेजाब की सब चीजों को तोड़ देना।"

गधेवाला मान गया। दिलैला गधे पर सारा समान ढोकर अपने घर चली गई। माँ को देखते ही जीनाब ने पूछा—"माँ क्या करके आई हो!"

"चार की आँखों में धूल झोंककर आई हूँ। यह एक अधिकारी की पत्नी के गहने हैं। ये एक दुकानदार की थैली और कुर्ता है और ये सब नील के व्यापारी का माल है। यह गधा चौथे आदमी का है।"—दिलैला ने घमंड के साथ कहा।

"यह सब तो ठीक है। माँ! अब तुझे घर से नहीं हिलना चाहिए। वे चोरों तेरी तलाश में होंगे!"—जीनाब ने कहा।

"अरे पगली! अभी तो आधा काम भी नहीं हुआ है। सब देखती रहना!"

जब वह रंगरेज़ ढाबे में रोटी खरीद रहा था, तो नौकर ने पूछा—"क्यों बुलाया है!" उसको शक हुआ। जब वह दुकान पर पहुँचा तो गधेवाले लड़का सारी चीज़ें तहस-नहस कर रहा था।

"यह क्या कर रहा है! हो सत्यानाश तेरा!"—दुकानदार ने कहा।

"महाजनों ने आपको छोड़ तो दिया!"—गधेवाले लड़के ने कहा।

उन दोनों को एक दूसरे का मतलब समझने के लिए काफी देर लगी। आखिर रंगरेज़ ने पूछा—"वह बुढ़िया कहाँ है!"

और गधेवाले ने पूछा—"मेरा गधा कहाँ है!" वे बक-झक करने लगे। आसपास के लोग इकट्ठे हो गये। सब मिलकर रंगरेज़ के घर गये।

जब उसके मकान का निचला हिस्सा खटखटाया गया, तो कुर्ता बिना पहिने मोहसिन ने दरवाज़ा खोला। "कहाँ है गधे, तेरी माँ....!"—रंगरेज़ चिल्लाया। "मेरी माँ को गुज़रे हुए तो ज़माना हो गया है!"—मोहसिन ने कहा। उन दोनों को आपस में समझने के लिए और थोड़ा समय लग गया। आखिर मोहसिन ने कहा—"वह बुढ़िया अपनी लड़की की मुझसे शादी करने के लिए, मुझे बुलाकर लायी थी; वे लोग ऊपर हैं।"

रंगरेज़ सीढ़ी चढ़कर ऊपर गया। खटखटाने पर खातून ने किवाड़ खोले। "तुम्हारी माँ कहाँ है!"—व्यापारी ने पूछा। "मेरी माँ को मरे हुए तो बहुत दिन हो गये हैं।"—खातून ने कहा।

चारों ने जब आपस में सोचा-समझा तो उनको मालूम हो गया कि उनको धोखा दिया गया है। उन्होंने खातून को घर भेज दिया और शहर के रक्षक, खलीफ़ा के पास जाकर, तीनों ने शिकायत की।

खलीफ़ा ने अचरज से उनकी शिकायत सुनकर कहा—"तुम्हारी हालत देखकर मुझे दया आती है। परन्तु इस शहर में रहनेवाली बुढ़ियाओं में से मैं कैसे उस बुढ़िया को खोज निकालूँ, जिसने आप लोगों को धोखा दिया है! अगर आपने जैसे तैसे उसे पकड़ लिया, तो मैं उसे ज़रूर सज़ा दूँगा।" कोई चारा न था, वे तीनों बुढ़िया को खोजने निकल पड़े।

(अभी और है।)

राजा का गर्व-भंग

किसी ज़माने में, मगध देश पर चतुरंगवीर राज्य करता था। वह शतरंज खेलने में बहुत निपुण था। दूर दूर तक उसकी प्रसिद्धि थी। बड़े बड़े शतरंज के खिलाड़ी भी उससे मुक़ाबला न कर पाते थे।

रोज़ शतरंज के खिलाड़ियों को खेलने के लिए आता देख राजा ने घोषणा की—"जो कोई शतरंज में मुझसे हार जायेगा, उसका सिर काट दिया जायेगा।"

यह घोषणा सुनते ही, शतरंज के खिलाड़ियों ने आना बन्द कर दिया। राजा से शतरंज खेलने के लिए कोई न आता। अगर भूला-भटका, इक्का-दुक्का कोई पहुँच भी जाता, तो राजा उनको अपनी घोषणा याद दिलाता। और अगर कोई ज़िद पकड़कर खेलता भी, तो राजा उसको हराकर अपनी घोषणा के अनुसार उसका सिर कटवा देता।

जब दो-चार के सिर इस तरह कट गये तो राजा से शतरंज खेलनेवाला ही कोई न रहा। फिर राजा की भी शतरंज खेलने की आदत जाती रही।

उन्हीं दिनों कावेरी नदी के किनारे एक पंडित रहा करता था। वह शतरंज का बहुत अच्छा खिलाड़ी था। अगर कोई शतरंज खेल रहा होता, तो प्रायः वह कहा करता—"यह दाँव खेलो, और काले राजा को पकड़ लो।" अगर कोई खेलने का मौका देता तो वह स्वयं उन्हें खेलकर भी दिखा देता।

इस पंडित तक मगध देश के राजा की घोषणा पहुँची। उसको राजा पर गुस्सा आया। इस राजा को इतना घमंड क्यों है! शतरंज खेल का मज़ा खेलने में है, न कि जीतने में। खेल में तो एक जीतनेवाला

श्रीमती डी. मैथुला

होगा और दूसरा हारनेवाला ही। सिर्फ हार जाने से ही क्या यह राजा एक खिलाड़ी का सिर कटवा सकता है?

उस पंडित ने मगध देश के राजा को सबक सिखाने की सोची। वह पैदल चलता चलता मगध देश पहुँचा। जैसे तैसे उसको राजा का दर्शन भी मिल गया।

"महाराजा! मैं कावेरी के किनारे रहता हूँ। यह जानकर कि शतरंज में आपको कोई हरा नहीं सकता, आपका खेल देखने मैं चला आया हूँ"—पंडित ने कहा। "हां! मुझे भी शतरंज खेलने की मर्जी हो रही है, पर कोई खिलाड़ी ही नहीं मिलता। मैंने यह घोषणा कर रखी है, अगर कोई मुझसे हार गया तो मैं उसका सिर कटवा दूँगा। इसलिए कोई आता ही नहीं है।"—राजा ने कहा।

पंडित ने कुछ सोच कर कहा—"अगर ऐसी बात है तो मैं आपसे खेलूँगा।"

"अरे पंडित, कहीं पागल तो नहीं हो गये हो! हार गये तो सजा भोगने के लिए तैयार हो न?—राजा ने पूछा।

"इससे पहिले कि मैं इस प्रश्न का जवाब दूँ, मैं चाहता हूँ कि आप कृपया मेरे एक सन्देह का निवारण करें।"—पंडित ने कहा। "बताओ, तुम्हारा क्या सन्देह है?"—राजा ने पूछा।

"अगर खेल में मैं हार गया तो आप मेरा सिर कटवा देंगे। मान लीजिये, अगर मैं जीत गया तो आप मुझे क्या देंगे?"—पंडित ने पूछा।

"शतरंज में जीतनेवाला जो चाहे, मैं उसे दूँगा। कहो, क्या चाहिये?"—राजा ने पूछा।

"अगर मैं जीत गया तो मुझे धान दिलवाइये। शतरंज के एक खाने के लिये,

दूसरे खाने से दुगने के हिसाब से, मुझे ६४ खानों के लिये धान दीजिये। मैं इससे अधिक कुछ नहीं चाहता।"—पंडित ने कहा।

"तुम भी क्या नादान हो। मुझे शतरंज में हराकर यही चाहते हो! लगता है, तुम्हें जीतने की उम्मीद नहीं है।"—राजा ने कहा।

"जी! उम्मीद तो अच्छा, मैं एक ही खेल में आपको दो बार हरा सकता हूँ।"—पंडित ने कहा।

"मतलब!"—राजा ने पूछा।

"वह आपको खेल खतम होने पर पता लग जायेगा।"—पंडित ने कहा।

अगले दिन शतरंज के खेल का प्रबन्ध किया गया। खेल देखने के लिये भीड़ जमा हो गई। सब ने सोचा कि बिचारे पंडित की जान जायेगी। राजा ने खूब डटकर खेला। पर अन्त में पंडित ही जीता।

"मैं हार गया हूँ। तुम सचमुच बहुत अच्छे खिलाड़ी हो। पर तुम तो कहते थे कि मुझे दो बार हराओगे, पर एक ही बार हराया है।"—राजा ने कहा।

"पहिले आप मुझे मेरा ईनाम दिलवाइये, फिर आपको दूसरी हार के

बारे में बताऊँगा।"—पंडित ने कहा। राजा ने सिपाहियों को धान के बोरे लाने के लिये कहा।

"पहिले यह तो हिसाब लगाइये कि मुझे कितना धान देना पड़ेगा! उस हिसाब के अनुसार धान के बोरे मँगाये जा सकते हैं।"—पंडित ने कहा।

राजा ने गणित के पंडितों को बुलवाया।

"पहिले खाने में कितने दाने रखे जायें?"—गणित के पंडितों ने पूछा।

"एक दाना काफी है।"—पंडित ने कहा। राजा पंडित के सन्तोष को देखकर

51

ज़रा मुस्कराया। पहिले खाने में एक दाना, दूसरे में दो, तीसरे में चार, इस तरह ६४ खानों का हिसाब लगाकर गणित के पंडितों ने यह संख्या बताई:

१८४४६७४४०७३७०९५५१६१५

यह सुन राजा हक्काबक्का रह गया:

"अब यह हिसाब लगाइये कि यह धान कितने बोरे में आ सकेगा।"—राजा ने कहा। गणित के पंडितों ने सेर भर चावल लेकर गिने, और फिर बोरे भर धान का हिसाब लगाकर उन्होंने बताया—"महाराज! दो लाख वर्षों तक आपको हमारे राज्य में पैदा होनेवाले धान को देते रहना होगा।" राजा के आश्चर्य की सीमा न रही। "दूसरी बार हारने का क्या यही मतलब है!"—राजा ने पूछा।

"हाँ, आप कह रहे थे कि मैं बहुत कम माँग रहा था। अगर मैं हार जाता तो मेरा सिर कट जाता। मैं जीता हूँ, पर मेरा माँगा किसी भी हालत में आप नहीं दे सकते।"—पंडित ने कहा।

"यह ग़नीमत है कि खेल में जीत गये हो। हार गये होते तो क्या होता! तुमने इतनी हिम्मत कैसे की!"—राजा ने पूछा।

"जब आपने मेरे माँगे को देना स्वीकार कर लिया, था तभी मैं समझ गया था कि आपको गणित का ज्ञान नहीं है। यह सोचकर कि आप ज़रूर हार जायेंगे, मैंने दाँव खेलना शुरु किया था। अगर आप गणित का ज्ञान रखते तो मैं आपसे खेलता ही नहीं।"—पंडित ने कहा।

राजा को पंडित के पांडित्य से बहुत सन्तोष हुआ, और उसको बहुत सा धन-धान्य देकर विदा किया। राजा का गर्व-भंग हुआ, और वह उस दिन से लेकर सब से शतरंज खेलने लगा।

आदिम जन्तु

सरीसृप युग के बाद, सस्तन प्राणियों का युग प्रारम्भ होता है। उस ज़माने में जब बड़े सरीसृप भूमि, जल, वायु, में अपना प्रभुत्व जमाये हुये थे, आजकल के चूहों जितने बड़े रूप में, सस्तन प्राणियों का आना हुआ।

सरीसृपों को यह कल्पना भी न थी कि ये छोटे छोटे सस्तन प्राणी उनका स्थान लेंगे। पर, ये सस्तन प्राणी सरीसृपों से, कई दृष्टि से बहुत आगे थे।

- सरीसृप ठण्डे रक्तवाले थे, जब कि सस्तन जन्तुओं का खून गरम था। सरीसृप युग की समाप्ति पर संसार में कई जगह तीक्ष्ण हिम-पात भी हुआ। इस हिम-पात में ठण्डे रक्तवाले सरीसृप लुप्त-प्राय हो गये, और ठण्डे रक्तवाले सस्तन जन्तु रह गये, जिनके चर्म पर बाल होते हैं। इनसे सरदी रुकती है।
- सरीसृप जल्दी जल्दी इधर उधर घूम नहीं सकते थे। इसलिये सस्तन जन्तु, सरीसृपों से बचकर आसानी से आत्म-रक्षा कर लेते थे।
- सरीसृप अण्डे देने के बाद उनकी परवाह न करते थे, परन्तु सस्तन जन्तु उनको गर्भ में रखकर, पैदा होने पर दूध से उनका पोषण करते थे। इस तरह उनकी संतति बढ़ती गई।
- सरीसृपों के पर्वताकार शरीर में बुद्धि की मात्रा कम थी, और छोटे छोटे सस्तन प्राणियों में बुद्धि की मात्रा अधिक थी।

सस्तन युग ६ करोड़ वर्ष पहिले शुरू हुआ था, और अब भी चल रहा है। बड़े सस्तन जन्तुओं के बारे में अगले अंक में जानेंगे।

बताओगे ?

★

१. भूमि की मध्य रेखा की लम्बाई क्या है?

२. संसार में सब से अधिक वर्षा कहाँ होती है?

३. अबरख की खानें भारत में कहाँ हैं?

४. चाय कहाँ पाये जाते हैं?

५. अडिस अबाबा कहाँ की राजधानी है?

६. भारत की कितनी प्रतिशत आबादी शहरों में रहती है?

७. भारत की राष्ट्रीय पताका में क्या रेखाएँ हैं?

८. ब्रिटेन के मुख्य मन्त्री कौन हैं?

९. आन्ध्र के मुख्य मन्त्री कौन हैं?

१०. भारत की ऐसी कौन-सी भाषा है, जो संख्या में केवल हिन्दी के बाद आती है?
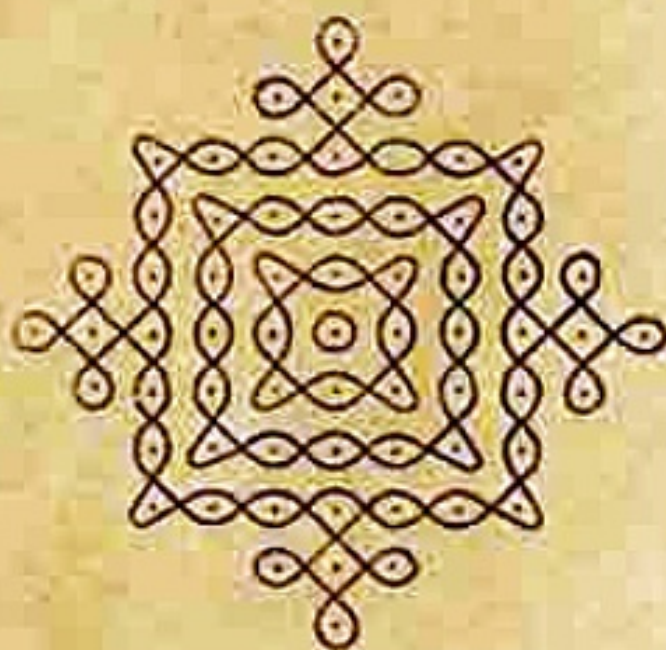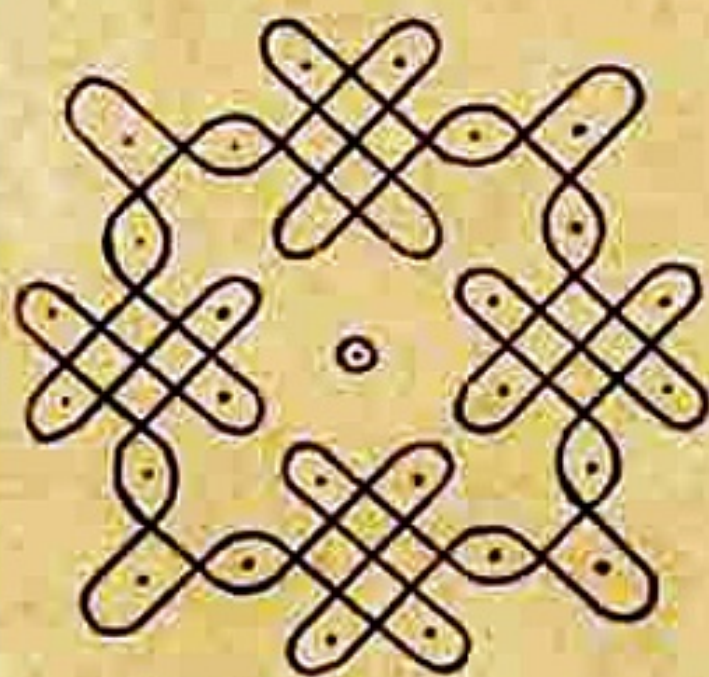
सिद्धार्थ की दया

श्री सुरेश विद्याधिकारी, सहारनपुर.

कपिलवस्तु पर शुद्धोदन का
शासन सुदृढ़ अति अभिराम।
आस पास के सब राजागण
झुककर करते उसे प्रणाम॥

राजा ने अपने यौवन में
एक पुत्र को प्राप्त किया।
बड़े प्रेम से पाला-पोसा
'सिद्धार्थ' का नाम दिया॥

एक रोज़ अपने उपवन में
टहल रहे थे राजकुमार
निकट चरण के गिरा हंस आ
छूट रही थी शोणित-धार॥

"हंस ये मेरा, मैंने मारा
लिये इसे क्यों जाते हो?
पर-वस्तु को हर लेने में
बिलकुल नहीं लजाते हो॥"

इन वचनों को सुनकर पीछे
सिद्धार्थ ने मुख मोड़ा।
दीखा उन्हें चचेरा भाई
आता था दौड़ा दौड़ा॥

"हंस ये मेरा शरणागत है
इस पर है मेरा अधिकार।
व्यर्थ न झगड़ो, घर को जाओ"
तब यों बोले राजकुमार॥

देवदत्त को गुस्सा आया
ऊँचे स्वर में बोल उठा।
"चलो परीक्षा हित राजा को
सच्चा कौन कौन झूठा॥"

बात भा गई सिद्धार्थ को
चल वे दोनों साथ पड़े।
पहुँच राज-सभा के अन्दर
एक स्थान पर हुए खड़े॥

महाराज ने आँख उठाई
खड़ा हुआ उनको पाया।
पूछा कारण, उन दोनों ने
सारा किस्सा बतलाया॥

एक युक्ति सूझी राजा को
सेवक को आदेश दिया।
"रखो बीच में हंस," किनारों
पर दोनों को खड़ा किया॥

"सुनें सभासद सब विद्वज्जन
जिधर हंस यह जाएगा।
इस सुन्दर सुमनोहर पक्षी
पर वह हक को पाएगा॥"

उभय दिशा में आँख उठाकर
सहमे पक्षी ने देखा।
चला दिशा में सिद्धार्थ की
बनती थी पीछे रेखा॥

"भक्षक से रक्षक होता है
सदा बड़ा औ' सदा महान।
इस कारण हम सिद्धार्थ को
हैं देते ये पक्षी दान॥"

हर्ष गया छा राज सभा में
"जय हंस की, जय सिद्धार्थ।
प्राणि वर्ग पर दया दिखाना
कहलाता है धर्म यथार्थ॥"

हमारी भूमि—१

हम जिस भूमि पर रहते हैं, उसका क्षेत्रफल १९,६९,५००,०० वर्ग मील है। इसमें ५,७५,१०,००० वर्ग मील भूमि है, और १३,९४,४०,००० वर्ग मील जल है।

इस भूमि में, १७० लाख वर्ग मील में एशिया महाद्वीप है, ११५ लाख वर्ग मील अफ्रीका, ३७॥ लाख वर्ग मील यूरुप, ८० लाख वर्ग मील उत्तर अमेरीका, ६८ लाख वर्ग मील दक्षिणी अमेरीका, ६२ लाख, ५ हज़ार वर्ग मील ध्रुवीय प्रदेश—आस्ट्रेलिया, इंडोनिशिया आदि मिलाकर ५४ लाख ४० हज़ार वर्ग मील हैं।

जल भाग में प्रशान्त महासमुद्र का क्षेत्रफल ६८६ लाख ३४ हज़ार वर्ग मील है, अत्लांतिक महासागर का ४१३ लाख, २२ हज़ार वर्ग मील, हिन्द महासमुद्र का २८३ लाख ५० हज़ार वर्ग मील, दक्षिणी ध्रुव समुद्र ७५ लाख वर्ग मील और उत्तर ध्रुव समुद्र ५४ लाख ४० हज़ार वर्ग मील है।

सब समुद्रों में प्रशान्त महासागर सब से अधिक गहरा है। उसकी गहराई ३५,६०० फुट है। अन्धु महासागर का गहरा भाग ३०,२४६ फुट हिन्द महासागर का २२,९६८ फुट, उत्तर ध्रुव समुद्र का १७,८५० फुट और दक्षिण ध्रुव समुद्र का १४,२७४, फुट।

२ हज़ार मील से लम्बी नदियां भूमि पर १२ हैं। सब से लम्बी नील है, जिसकी लम्बाई ४,१६०, मील है, अमेजन ३,९०० मील, यांगटसी ३,१०० आबनदी २,५०० मील, मिसिसिपि २,४७० मील, मिसोई नदी २,४३२, वोल्गा २,२९० मील है।

संसार की सब से बड़ी चोटियों में से प्रथम चौदह हिमालय में हैं। उनमें सबसे अधिक ऊँची एवरेस्ट है, उसकी ऊँचाई २९१४१ फुट है।

संसार की आबादी अन्दाजन २२६,४४०९,००० है। इसमें आधे से ज्यादह एशियावासी हैं—यानी, ११७,८३,४१,००० है।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अप्रैल १९५६ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें ।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए । परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों । परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर हो लिख कर निम्नलिखित पते पर भेजनी चाहिये ।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

फ़रवरी – प्रतियोगिता – फल

फ़रवरी के फ़ोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं ।

इनकी प्रेषिका को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा ।

पहिला फ़ोटो : हम तो जोगी ध्यान लगाये... दूसरा फ़ोटो : बैठे कब से आस लगाये !

प्रेषिका : श्री रामकुमारी, १२, नन्दनम्, मद्रास - १८

मंच के बीचों बीच, एक साधारण कुर्सी पर जादूगर की सहायिका बैठी हुई होती है। प्रेक्षकों में से कोई उठकर, उनकी आंखों पर अपने रुमाल से पट्टी बांध देता है। पट्टी इस तरह बांधी जाती है कि उनको किसी भी हालत में कुछ न दीखे।

फिर, जादूगर कहता है कि उनकी सहायिका, आंखों पर पट्टी बांध जाने के बावजूद भी, दिव्य-दृष्टि द्वारा सब कुछ देख सकती है। यह कह, वह प्रेक्षकों के बीच में जाकर तीस-एक रुमाल इकट्ठा करता है। किसी की टोपी लेकर, उसमें ये सब रुमाल मिला-जुला देता है। बाद में वह टोपी मेज़ पर प्रेक्षकों के सामने रख दी जाती है।

तब जादूगर, उस टोपी में से एक रुमाल निकाल कर—आंखों पर पट्टी बंधी सहायिका के सामने दिखाता है, और पूछता है कि वह रुमाल किस रंग का है। तुरंत वह सहायिका उसका रंग बता देती है। अगर जादूगर नीले रंग का रुमाल दिखाता है तो वह धीमे से कहती है—"नी....ला"। अगर वह लाल रंग का दिखाता है तो वह कहती है "ला.........ल"। प्रेक्षकों को ऐसा लगता है कि मानों उस सहायिका को दिव्य-दृष्टि प्राप्त हो और वह सब उसी के आधार पर कहती हो।

इसका रहस्य यह है: इन्द्र धनुष में सात रंग होते हैं—(१) जामनी (२) हल्का नीला (३) गहरा नीला (४) हरा (५) हरा पीला (६) टेसू (७) लाल। इन सातों रंगों के साथ जादूगर सफ़ेद, काला, और धब्बेदार रंग भी दिखाता है। यह ज़रूरी है कि

जादूगर के सहायक को, ये सब एक के बाद एक क्रम से समझा दिये जाते हैं।

इस जादू में, जब तक एक और सहायक नहीं मदद करता, तब तक "दिव्य-दृष्टि" अच्छी तरह काम नहीं करती। यह दूसरा सहायक, प्रेक्षकों को नहीं दिखाई देना चाहिये। वह परदे के पीछे एक जगह खड़ा रहता है। वह मंच पर जो कुछ किया जाता है, वह सब कुछ अच्छी तरह देखता रहता है।

ज्यों ही, जादूगर एक रुमाल ऊपर उठाता है, तो वह तुरंत उसका रंग देख कर, संकेत द्वारा, मंच पर बैठी सहायिका को बता देता है। इसके लिए एक पतला रेशमी तागा इस्तेमाल किया जाता है। उसका एक सिरा मंच पर बैठी सहायिका की छोटी अंगुली में बँधा रहता है। दूसरा सिरा, परदे के पीछे छुपे छुपे खड़े सहायक के हाथ में रहता है। (चित्र देखो)

अगर वह तागे को एक बार खींचता है तो इसका मतलब है कि रंग जामनी है। अगर दो बार खींचता है तो उसका रंग नीला है, तीन बार खींचता तो

गहरा नीला, सात बार खींचा तो लाल। ये उसके संकेत हैं।

इस तरह के संकेतों द्वारा कितने ही और जादू करके, प्रेक्षकों को आश्चर्य चकित किया जा सकता है। मैंने कई ऐसे जादूगर भी देखे हैं, जो अपने सहायकों द्वारा नोटों पर लिखे नम्बर, काले बोर्ड पर लिखे छोटे छोटे गणित के प्रश्न भी पढ़वाते हैं।

(पाठक यदि इस जादू के बारे में और जानकारी प्राप्त करना चाहें, तो वे "चन्दामामा" का हवाला देते हुए प्रोफ़ेसर साहब को लिख सकते हैं। ध्यान रहे कि पत्र अंग्रेज़ी में ही लिखे जाने चाहिये।

उनका पता यों है :—

प्रो० पी. सी. सरकार

मेजीशियन, पो. बा. नं. १८८८, कलकत्ता-१२

रंगीन चित्र-कथा

एक दिन का राजा—१

खलीफा हरून अल रशीद के ज़माने में, बग़दाद में एक विचित्र ब्रह्मचारी रहा करता था। उसका नाम अबू अल हासन था। वह अपनी माँ के साथ एकान्त में रहा करता था। आस-पड़ोस के लोगों से भी बातें न करता। सिवाय परदेशियों के, वह अपने घर में किसी को बुलाता भी नहीं और अगर किसी को एक बार बुलाता, तो उसे दुबारा न बुलाता।

हर रोज़ शाम को अबू, शहर के बाहर नदी के पुल पर जाकर, परदेशियों का इन्तज़ार करता बैठा रहता। चाहे परदेशी धनी हो, या ग़रीब, जवान हो या बूढ़ा, वह उससे कहता—"मेरा यह अर्ज़ है कि आप आज रात को हमारे घर में मेहमान रहें।" वह मेहमान को घर ले जाता और खूब खिलाता-पिलाता। अगले दिन, मेहमान जब जा रहा होता तो अबू कहता—"हुज़ूर! मैंने आपको तब मेहमान बनाया, जब आप बग़दाद में किसी की शक्ल भी न जानते थे। पर मैं खुदा के लड़के को भी दूसरी बार मेहमान नहीं बनाता। इसलिये आप अपने रास्ते जायें, और मैं अपने। अगर हम इत्तफ़ाक से कभी बग़दाद की गलियों में मिले, तो भी मैं आप से बात न करूँगा। आप भी मुझसे न बोलें।" तब वह मेहमान को बताता कि बग़दाद में कहाँ कहाँ क्या क्या है!"

एक दिन जब शाम को अबू पुल के पास खड़ा था, तो एक व्यक्ति उसके पास आया, जो शक्ल-सूरत और वेष-भूषा में एक रईस बूढ़ा व्यापारी लगता था। उसके पीछे एक हट्टा-कट्टा, महावर गुलाम

भी था। वह खलीफ़ा हरून अल रशीद था। वह वेष बदलकर, शहर में इस तरह एक बार निकला करता था।

यह बात अबू को न मालूम थी। उसने उसके पास जाकर कहा—"आप आज रात हमारे घर में मेहमान बने रहें, यह मेरी ख्वाहिश है।"

खलीफ़ा मान गया और अबू के घर गया।

अबू की माँ ने, तरह तरह के अच्छे पकवान बनाकर उन दोनों को परोसा। भोजन के बाद, अबू ने कुछ पीने की चीज़ें लाकर मेहमान के सामने रखीं।

बातचीत के दौरान में, मेहमान से अबू ने अपनी कहानी यों बतायी :

"मेरा नाम अबू अल हसन है। मेरे पिता व्यापारी थे। उन्होंने मेरी बड़ी होशियारी और सख्ती से परवरिश की। इसलिये जब वे गुज़र गये, तो मुझे पैसा उड़ाने की मर्ज़ी हुई। परन्तु पैसा उड़ाने से पहिले मैंने अपनी आधी पूँजी से, ज़मीन-जायदाद खरीद ली, और आधा नक़द रखा। थोड़े दिनों में, दोस्त, और जान-पहिचानवालों के साथ, खाने-पीने, इधर उधर घूमने फिरने में पूँजी खर्च हो गई। पैसा खतम होते ही, मेरे वे दोस्त यकायक ग़ायब हो गये।

दोस्ती कैसी होती है, यह मैं जान गया। तब से मैंने क़सम खाई कि ऐसे लोगों को ही पास बुलाऊँगा, जिन्हें मैं न जानता हूँ। पर दोस्ती से मन ऊबा नहीं। इसलिये रोज़ अजनबियों से इस तरह दोस्ती करता रहता हूँ। कोई भी हो, बस, एक ही बार दोस्ती करता हूँ। दोस्ती बढ़ने नहीं देता। इसलिये सवेरे ही मैं आपको यहाँ से भेज दूँगा। अगर हम बाद में कभी मिले भी तो मैं आपकी ओर नहीं देखूँगा। आप बुरा न मानें। (अभी है)

हैदराबाद सरकार ने निज़ाम सागर सिंचाई योजना के अन्तर्गत अठारह हज़ार एकड़ भूमि पर कृषि करने का निर्णय किया है। इसके अतिरिक्त १ लाख ३५ हज़ार एकड़ भूमि का विकास पहले ही किया जा चुका है।

• • •

अन्धे बच्चों के लिए एक 'आउट डोर' मनोरंजन केन्द्र का, जो सम्भवतः समस्त एशिया में अपने ढंग का प्रथम होगा, उद्‌घाटन अभी हाल में बम्बई के राज्यपाल श्री हरेकृष्ण मेहताब ने बम्बई में किया। अब तक अन्धों के लिए खोली गयी संस्थाओं के अन्धे बच्चे केवल अपने स्कूलों में ही रहते आये हैं।

• • •

समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ कि औरंगाबाद में २॥ वर्षीय एक छोटा बच्चा अपने घर की दूसरी मंजिल से, जो लगभग ३२ फुट ऊँची है, खेलते खेलते अचानक नीचे ज़मीन पर गिर पड़ा। पर आश्चर्य तो इस बात का था कि बच्चे को किसी तरह की चोट नहीं लगी। बच्चा पन्द्रह मिनट तक बेहोश रहा और उसके बाद वह पहले की तरह खेलता-कूदता रहा।

• • •
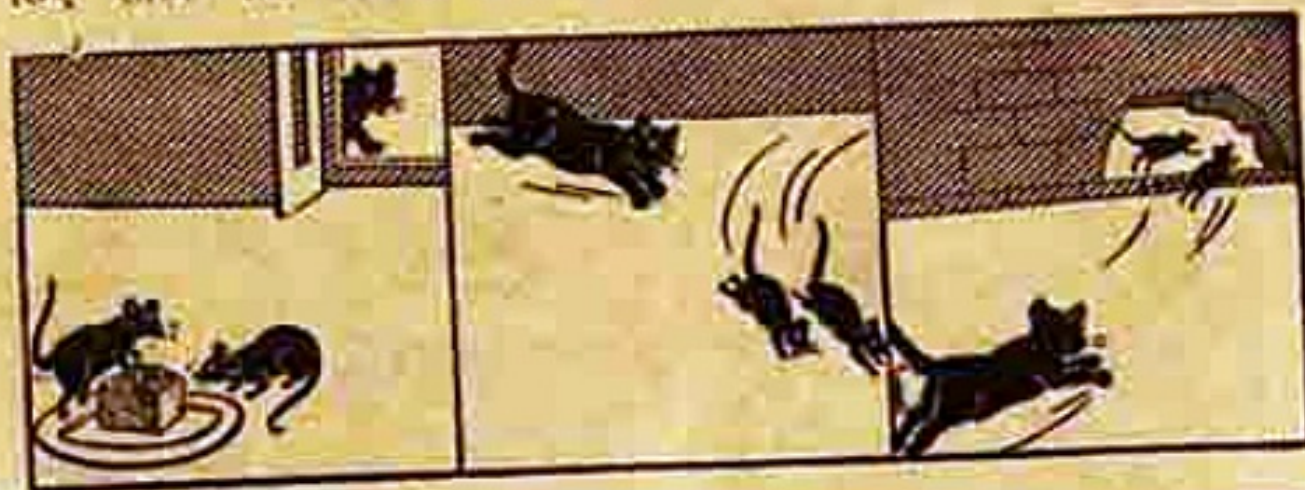
पिछले दिनों प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने लोक सभा में घोषित किया था कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु के कारणों की जांच करने के लिए भारत से तीन सदस्यों की एक समिति जापान भेजी जायगी। यह भी बताया गया था कि इस सम्बन्ध में जापान सरकार से सलाह-मशविरा किया गया और उसने पूरा सहयोग देने का वचन भी दिया।

* * *

समाचार पत्रों से मालूम होता है कि जबसे संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया है, तभी से भारतीय सेना में भी हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग होने लगा है। हाल ही में सेना में एक नया महत्त्वपूर्ण कार्य का आरंभ हुआ। आगे से सेना में कवायद के समय आज्ञाएं अंग्रेजी में देने के बजाय हिन्दी में दी जायेंगी। इसके शब्दों की एक सूची भारत सरकार की तरफ़ से प्रकाशित की गयी है।

* * *

यह ज्ञात हुआ है कि रूसी-हिन्दी, बंगाली-रूसी, तथा तमिल-रूसी शब्द कोशों को तैयार करने में आजकल रूस के शास्त्र वेत्ता लगे हुए हैं।

* * *

हाल ही में प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने आन्ध्र में नागार्जुन सागर बांध योजना का शिलान्यास सम्पन्न किया था! आन्ध्र और हैदराबाद सरकार ने बांध बनाने का सम्मिलित योजना बनायी है। इसके लिए १२२ करोड़ रुपये का व्यय होगा और ३० लाख ५० हजार एकड़ भूमि की सिंचाई होने की संभावना है।

चित्र - कथा

एक दिन दास और वास ने शेर का वेष भरकर 'टाइगर' को डराने की सोची। शेर का एक चमड़ा उन्हें मिल गया। दोनों ने उसे अपने ऊपर डाल लिया और शेर की तरह आवाज़ करते हुए 'टाइगर' को खोजने लगे। खिड़की में से 'टाइगर' ने यह सब पहले ही देख लिया था; इसलिये वह डरने के बजाय बड़े निर्भीक होकर भौंकने लगा और नकली शेर पर कूद पड़ा! बेचारे चमड़े में छिपे हुए दास और वास एक दूसरे के ऊपर गिर पड़े।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Ltd., Madras 26 and Published by him for Chandamama Publications, Madras 26. Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'

पुरस्कृत परिचयोक्ति

"बैठे कबसे आस लगाए!"

प्रेषिका : श्री रामकुमारी, मद्रास

CHANDAMAMA (Hindi) FEBRUARY 1956 Regd. No. M.

रंगीन चित्र-कथा चित्र - १